

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण रविवार 18 अक्टूबर 2026 वर्ष-9,अंक-257 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com

www.facebook.com/krantisamay1

www.twitter.com/krantisamay1

सीजेआई बोले-फैसला देने से पहले सामने वाले को सुनें

असहमति के साथ सम्मान बनाए रखना जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने शनिवार को लॉ स्टूडेंट से कहा कि आप किसी के साथ असहमत हो सकते हैं लेकिन उसकी गरिमा बनाए रखें। कोई भी फैसला देने से पहले सामने वाले को भी सुनें। सीजेआई नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी बंगलुरु के 34वें एनुअल दीक्षांत समारोह में शामिल हुए थे। सीजेआई ने कहा कि कानूनी शिक्षा सिर्फ एकेडमिक नॉलेज तक सीमित नहीं होनी चाहिए। छात्रों को अलग-अलग विचारों को समझना जरूरी है। इससे पहले यूनिवर्सिटी के 700 से ज्यादा मौजूदा और पूर्व छात्रों ने सीजेआई सूर्यकांत को दीक्षांत समारोह में आमंत्रित किए जाने पर आपत्ति जताई थी। इसके चलते



27 अगस्त को यूनिवर्सिटी ने 12 सितंबर को होना वाला दीक्षांत समारोह रद्द कर दिया था। हालांकि, पिछले महीने यूनिवर्सिटी ने दीक्षांत समारोह रद्द करने का अपना फैसला वापस ले लिया।

न्याय के लिए खड़े होने का साहस जरूरी

कानूनी शिक्षा का उद्देश्य केवल अपराधिक या संवैधानिक कानून के सिद्धांतों को सीखना नहीं है। इसका मकसद ऐसे लोगों से संवाद करने का अनुभव हासिल करना भी है, जो दुनिया को हमसे अलग नजरिए से देखते हैं। कानून और न्यायिक फैसलों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। न्याय के लिए खड़े होने का साहस और अनसुनी आवाजों की चिंताओं को सुनने की विनम्रता भी जरूरी है।

समाज में योगदान देने की भी जरूरत है

छात्रों को अपने सिद्धांतों से समझौता करने और प्रोफेशनल लाइफ में शॉर्टकट से बचना चाहिए। कानूनी पेशे के जरिए अन्याय को दूर करने, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करने से वकीलों को संतुष्टि मिल सकती है। राष्ट्र हमसे सिर्फ कानून के पेशेवर के तौर पर नहीं, बल्कि समाज में योगदान देने की भी उम्मीद करता है।

जेन-जी का ब्रेनवॉश कर रहा दिमागी नक्सलवाद

आरएसएस की महिला संगठन प्रमुख शांताकुमारी का बड़ा बयान

कहा-अपने फायदे के लिए युवाओं और महिलाओं को भड़का रहे



नागपुर (एजेंसी)। आरएसएस के महिला संगठन, राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख वी. शांताकुमारी ने जंतर-मंतर पर हो रहे विरोध प्रदर्शनों की आलोचना की। उन्होंने कहा कि ये

प्रदर्शन भारत में अस्थिरता पैदा कर रहे हैं और देश की मौजूदा स्थिति चिंता का विषय है। उन्होंने कहा- दिमागी नक्सलवाद जहरीले विचारों का सबसे खतरनाक और अदृश्य इकोसिस्टम है। यह जेन-

जी का ब्रेनवॉश कर रहा है। युवाओं और महिलाओं के मन में भी अशांति पैदा कर रहा है। उन्हें भड़का रहा है। शांताकुमारी ने ये बातें 16 अक्टूबर को नागपुर में राष्ट्र सेविका समिति के वार्षिक विजयादशमी उत्सव और शस्त्रपूजन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहीं। उन्होंने जंतर-मंतर पर हो रहे प्रदर्शनों को असंवैधानिक बताया। राष्ट्र सेविका समिति आरएसएस का महिला संगठन है। इसकी प्रमुख संचालिका वी. शांताकुमारी को शांतावका के नाम से भी जाना जाता है।

देश की संस्कृति नष्ट करना चाहते हैं प्रदर्शनकारी

शांताकुमारी ने कहा- हमने जंतर-मंतर पर लगातार प्रदर्शन देखे हैं। हम इन्हें असंवैधानिक प्रदर्शन कह सकते हैं। देश अराजकता का सामना कर रहा है। उन्होंने कहा- प्रदर्शनकारियों का मुख्य उद्देश्य भारत में अस्थिरता पैदा करना और देश की संस्कृति को नष्ट करना है। वे इसी इरादे से यह सब कर रहे हैं। वे समाज में कोई रचनात्मक बदलाव लाना नहीं चाहते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस साल स्वतंत्रता दिवस के भाषण में सबसे पहले 'दिमागी नक्सली' शब्द का इस्तेमाल किया था। उन्होंने कहा था- हम जंगलों से सशस्त्र नक्सलियों को खत्म करने और देश को उस संकट से मुक्त कराने में सफल हुए हैं। हालांकि, सशस्त्र नक्सली वले आए हैं, लेकिन दिमागी नक्सली आसपास मौजूद हैं।

सीएम मोहन यादव ने मानी मांग, उसी जमीन पर करते रहेंगे खेती

शिवराज की नाराजगी के बाद आदिवासियों को बड़ी राहत

सीहोर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के बुधनी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम कोसमी के आदिवासियों के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। अब कोसमी गांव के आदिवासी अपनी उसी पारंपरिक जमीन पर खेती करते रहेंगे और उन्हें वहां से हटाया नहीं जाएगा। यह जानकारी बुधनी से भाजपा विधायक रमाकांत भार्गव ने दी है, जिन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आदिवासियों की सभी जायज मांगें मान ली हैं।



मुख्यमंत्री ने दिए निष्पक्ष जांच के निर्देश

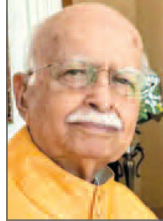
विधायक के अनुसार, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस बात पर सख्त नाराजगी जताई है और आश्वासन दिया है कि आदिवासी भाई-बहनों के साथ जो अभद्र व्यवहार किया गया है, उसकी निष्पक्ष जांच करवाकर उचित कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया है कि जिस भूमि पर आदिवासी भाई-बहन लंबे समय से खेती कर रहे थे, अपनी खेती जारी रखेंगे।

संक्षिप्त

समाचार

लालकृष्ण आडवाणी को सीने में हुआ इन्फेक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी को शुक्रवार देर शाम सीने में इन्फेक्शन के चलते दिल्ली के अपोलो हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया। अस्पताल अधिकारियों के अनुसार उनकी हालत स्थिर है और उनका इलाज चल रहा है। अस्पताल के मुताबिक, उन्हें आईसीयू में भर्ती किया गया है, जहां



न्यूरोलॉजिस्ट डॉक्टर विनीत सूरि की देखरेख में उनका इलाज चल रहा है। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है और वे लगातार डॉक्टरों की निगरानी में हैं। इस बीच, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा नेता जेपी नड्डा ने अस्पताल पहुंचकर लालकृष्ण आडवाणी से मुलाकात की और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। शुक्रवार शाम 7.30 बजे अस्पताल लाया गया अस्पताल के अधिकारियों ने बताया कि उन्हें शुक्रवार शाम करीब 7.30 बजे अस्पताल लाया गया। उन्हें फेफड़ों के विभाग में भर्ती किया गया है और डॉक्टरों की एक टीम उनकी देखरेख कर रही है।

गगनयान ने पास कर लिया मॉड्यूल अलग करने का टेस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इसरो ने गगनयान कार्यक्रम के क्रू मॉड्यूल और सर्विस मॉड्यूल को अलग करने वाले सिरटम की टेस्टिंग पूरी कर ली है। इसके बाद इस सिस्टम के डिजाइन की क्षमता की पुष्टि हुई है। ये परीक्षण लिवरूतनपुरम स्थित विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर में किए गए। गगनयान का पहला मानवरहित मिशन इसी साल 2026 में लॉन्च करने का लक्ष्य है। गगनयान का ऑर्बिटल मॉड्यूल क्रू मॉड्यूल और सर्विस मॉड्यूल

से मिलकर बना है। दोनों मॉड्यूल एक सेपरेट सिरटम के जरिए जुड़े होते हैं। अभिलिखित कनेक्शनों से इनके बीच बिजली और लिक्विड की सप्लाई होती है। लॉन्च से पहले दोनों मॉड्यूल को एक साथ जोड़ा जाता है। मिशन के ऑर्बिट में रहने वाले चरण के खत्म होने तक ये एक यूनिट की तरह काम करते हैं।

ट्रंप ने भारत पर 100 फीसदी टैरिफ वाला बिल रोका

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने रूस पर सख्त प्रतिबंध लगाने वाले कानून को फिलहाल रोक दिया है। ट्रंप ने शुक्रवार को इस फैसले से जुड़े आदेश पर हस्ताक्षर किए और कहा कि यह कदम अमेरिका के हित में है। इस कानून के तहत रूस से तेल और गैस खरीदने वाले देशों पर 100 फीसदी तक टैरिफ लगाया जा सकता था। इन देशों में चीन, भारत, स्लोवाकिया समेत हंगरी और अजरबैजान शामिल थे। प्रतिबंध से जुड़े कानून का मकसद रूस की कमाई के रास्ते बंद करना था, ताकि यूक्रेन के खिलाफ जारी युद्ध के लिए उसे पैसा जुटाने में मुश्किल हो। खास बात ये है कि ट्रंप ने 9 अक्टूबर को ही रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ डोजल खरीदने की डील की थी। ट्रंप को 30 दिन के अंदर फैसला लेना था- ट्रंप ने रूस पर प्रतिबंध लगाने वाले बिल (लिंग्स् ग्राहम एक्ट) पर 18 सितंबर 2026 को साइन किए थे। 16 सितंबर को हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स ने इसे 262-159 वोटों से मंजूरी दी थी। कानून पर साइन करने के बाद ट्रंप को प्रतिबंध लगाने का फैसला 30 दिन के अंदर करना था। हालांकि, ट्रंप ने इससे पहले ही प्रतिबंधों और टैरिफ पर छूट दे दी। भारत अपनी जरूरत का तेल दूसरे देशों से खरीदता है।

6 लोग घायल, जहरीली गैस का रिसाव होने से अफरा-तफरी भी मची

गुजरात के भरूच की दवा-फैक्ट्री में ब्लास्ट, 5 की मौत



भरूच (एजेंसी)। गुजरात के भरूच की सिंजील फार्माकेम नाम की एक दवा फैक्ट्री के रिएक्टर धमाके में 5 मजदूरों की मौत हो गई। वहीं, 6 लोग घायल हैं। घायलों को तुरंत पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। धमाका इतना तेज था कि इसके तुरंत बाद फैक्ट्री में मिथाइल डाइक्लोराइड नाम की एक जहरीली गैस का रिसाव भी शुरू हो गया, जिससे वहां अफरा-तफरी मच गई। हादसे की खबर मिलते ही प्रशासन और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। फिलहाल यह पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है कि यह धमाका किस वजह से हुआ।

हादसे के वक्त रिएक्टर चल रहा था- हादसा उस वक्त हुआ जब 15 हजार लीटर क्षमता वाले रिएक्टर में काम चल रहा था। धमाका इतना जोरदार था कि रिएक्टर के परखच्चे उड़कर फैक्ट्री की चारदीवारी के बाहर जा गिरे।

‘सुप्रीम’ फैसला-बच्चों को इंटरनेट से दूर रखना बेतुका

कहा-बाल यौन शोषण कंटेंट हटाने के लिए बने डेटाबेस



अधिकार घोषित किया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि हमारे बच्चों की सुरक्षा और उनकी आजादी एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। जस्टिस जेबी पारदीवाला और

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसले में कहा कि इंटरनेट तक पहुंच एक मौलिक अधिकार है, जो बच्चों सहित सभी पर लागू होता है। शीर्ष कोर्ट ने शनिवार को संविधान के अनुच्छेद 21 और 19(1)(ए) का जिक्र किया। अदालत ने इसके तहत बच्चों सहित हर व्यक्ति के लिए इंटरनेट तक पहुंच और इसके इस्तेमाल को एक मौलिक

पूरी तरह से पाबंदी लगाना कोई समाधान नहीं

बेंच ने माना कि इंटरनेट, अपने मौजूदा रूप में, बच्चों की सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा करता है। हालांकि, कोर्ट ने कहा कि यूटिल ऑनलाइन प्लेटफॉर्म हानिकारक सामग्री का पता लगाने और उसे हटाने में थिफल रहे हैं, इसलिए बच्चों की इंटरनेट तक पहुंच को सीमित करना ऐसा होगा मानो समस्या के लिए पीड़ित को ही जिम्मेदार ठहराया जा रहा हो। कोर्ट ने इस बात पर भी विचार किया कि क्या बच्चों की सुरक्षा के लिए उन्हें इंटरनेट और सोशल मीडिया से पूरी तरह दूर रखा जाना चाहिए। सर्वोच्च अदालत ने कहा कि अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत मिलने वाली अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में जानकारी और विचारों को जानने, प्राप्त करने और साझा करने का अधिकार भी शामिल है। इंटरनेट को विचारों, रचनात्मक अभिव्यक्ति और जानकारी के एक बाजार के रूप में बताते हुए, अदालत ने कहा कि इसका महत्व केवल ऑनलाइन उपलब्ध सामग्री तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सीखने, बातचीत करने और जानकारी तक पहुंचने के अवसर भी प्रदान करता है।

अभिजीत दीपके को मिल गई जमानत

शांति भंग करने के आरोप में हुए थे अरेस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके को शनिवार को जमानत मिल गई। दीपके को दिल्ली पुलिस ने शुक्रवार देर रात गिरफ्तार किया था। उन्हें शुक्रवार को कर्नाट प्लेस में ‘लहरा दो तिरंगा’ रैली से पहले हिरासत में लिया गया था। पुलिस ने बताया कि दिल्ली पुलिस अधिनियम की धारा 65 के तहत हिरासत से जुड़ी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद बोरा को रिहा कर दिया गया था जबकि दीपके को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 126 और 170 के तहत शांति भंग करने के एक नए मामले में गिरफ्तार किया गया है। इससे पहले, दस अक्टूबर को जब दिपके को हवाई अड्डे पर हिरासत में लिया गया था, तब भी शांति भंग करने का एक अलग मामला दर्ज किया गया था।

सुप्रीम कोर्ट के आवश्यक न्यायिक फैसलों के उजाले

(लेखक- ललित गर्ग)

लोकतंत्र की मजबूती का वास्तविक प्रमाण केवल चुनावों का नियमित आयोजन, संसद में बहुमत अथवा राजनीतिक दलों की लोकप्रियता नहीं है, बल्कि यह है कि संविधान के सामने सत्ता, विपक्ष और सामान्य नागरिक की स्थिति समान हो। जब सामाजिक न्याय, आरक्षण, धार्मिक स्वतंत्रता और चुनावी निष्पक्षता जैसे प्रश्न एक साथ राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में आते हैं, तब सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। न्यायपालिका वह संवैधानिक संस्था है, जिससे नागरिक को अपेक्षा करता है कि वह राजनीतिक आग्रहों, सामाजिक दबावों और सत्ता के प्रभाव से मुक्त रहकर न्याय का मार्ग प्रशस्त करेगी। आज आरक्षण की पात्रता और धर्मांतरण से जुड़े विवादों से लेकर निर्वाचन प्रक्रिया तथा न्यायालय की गरिमा तक, अनेक प्रश्न इसी अपेक्षा की कसौटी बनकर सामने हैं। इन प्रश्नों पर विचार करते समय आवश्यक है कि हम न किसी राजनीतिक पक्ष के प्रचारक बनें, न किसी धार्मिक समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह रखें, बल्कि संविधान की भावना और न्याय के व्यापक उद्देश्य को केंद्र में रखें। अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण भारतीय संविधान की उन ऐतिहासिक व्यवस्थाओं में है, जिनका उद्देश्य सदियों से चले आ रहे सामाजिक बहिष्कार, अस्पृश्यता और भेदभाव के दुष्परिणामों को दूर करना है। यह केवल रोजगार अथवा शिक्षा में कुछ अतिरिक्त अवसर उपलब्ध कराने की व्यवस्था नहीं, बल्कि उस सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संवैधानिक हस्तक्षेप है, जिसने बड़ी आबादी को लंबे समय तक समान अवसरों से वंचित रखा। इसलिए आरक्षण और धर्मांतरण के

संबंध में होने वाली बहस को भावनाओं, धार्मिक आग्रहों अथवा राजनीतिक आरोपों के बजाय संवैधानिक प्रावधानों और सामाजिक वास्तविकताओं के आधार पर समझना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट द्वारा यह स्पष्ट किया जाना एक स्वागत योग्य कदम है कि अनुसूचित जाति (एससी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के व्यक्तियों द्वारा धर्मांतरण करने पर उन्हें आरक्षण का लाभ नहीं मिलेगा। तमिलनाडु सरकार द्वारा इसे उच्च न्यायालय में चुनौती देना और अपने राज्य में इस प्रकार की सुविधा जारी रखना कि इस्लाम या ईसाई धर्म अपनाने के बाद भी आरक्षण का लाभ मिलता रहे, वास्तव में सनातन संस्कृति के आरक्षित वर्गों के हितों को कमजोर करने वाला और धर्मांतरण को परोक्ष रूप से बढ़ावा देने वाला कदम था। यह विडंबना ही है कि एक तरफ कुछ संगठन यह दावा करते हैं कि उनके यहां जातिगत भेदभाव का अस्तित्व नहीं है, वहीं दूसरी ओर वे एससी और ओबीसी वर्ग के लोगों को अपने पंथ में आने के बाद भी आरक्षण का लाभ मिलने की पुरजोर वकालत करते हैं। इस प्रकार के दोहरे लाभ और प्रलोभनों के कारण न केवल धर्मांतरण की प्रवृत्ति को बल मिलता है, बल्कि हिंदू समाज को इसका भारी नुकसान उठाना पड़ता है, क्योंकि धर्मांतरित लोग आरक्षण के साथ-साथ अल्पसंख्यक दर्जे के लाभों का भी अनुचित दोहन करने लगते हैं। हालांकि विभिन्न राज्य सरकारें छल-कपट से होने वाले धर्मांतरण के विरुद्ध कड़े कानून बना रही हैं, फिर भी यह समस्या थमने का नाम नहीं ले रही है, जिसका प्रमुख कारण धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर हो रहा इसका दुरुपयोग है। अब समय आ गया है कि इस गंभीर विषय पर कदम सरकार और सर्वोच्च न्यायालय मिलकर ठोस और प्रभावी

कदम उठाएं ताकि इस दुरुपयोग को रोका जा सके।

इसी व्यापक संवैधानिक परिप्रेक्ष्य में सर्वोच्च न्यायालय का चुनावी प्रक्रिया से जुड़े विवादों पर हस्तक्षेप भी उल्लेखनीय है। 12 अक्टूबर 2026 को राहुल गांधी सहित विपक्षी गठबंधन ‘इंडिया’ के नेताओं ने मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर सर्वोच्च न्यायालय की ओर मार्च किया, इस पर सुप्रीम कोर्ट का सख्त रवैया भी सराहनीय है। भले ही विपक्ष ने मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं, मतदाताओं के नाम हटाए जाने और निर्वाचन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर सवाल उठाए, इन आरोपों की सत्यता का निर्धारण न्यायिक परीक्षण और संबंधित अभिलेखों के आधार पर होना चाहिए, लोकतंत्र में चुनाव केवल सरकार चुनने का माध्यम नहीं, बल्कि प्रत्येक पात्र नागरिक को अपनी राजनीतिक इच्छा व्यक्त करने का संवैधानिक अवसर है। इसलिए मतदाता सूची का शुद्धता और विश्वसनीयता किसी एक दल का नहीं, पूरे लोकतंत्र का प्रश्न है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट तक मार्च करना एक गलत परम्परा का सूत्रपात है।

15 अक्टूबर को सर्वोच्च न्यायालय ने विपक्षी नेताओं की याचिका पर निर्वाचन आयोग, मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार तथा निर्वाचन आयुक्त सुखबीर सिंह संघु और विवेक जोशी से जवाब माँगा। इससे स्पष्ट होता है कि निर्वाचन आयोग जैसी महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्था के निर्णय भी न्यायिक समीक्षा के दायरे में आ सकते हैं। आयोग की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि उसके प्रत्येक निर्णय को प्रश्नों से परे मान लिया जाए। इसी प्रकार, किसी निर्णय से असहमति अपने आप में यह प्रमाणित नहीं करती कि आयोग ने अनुचित कार्य किया है।

विरोध प्रदर्शनों की रिपोर्टिंग में पत्रकारों की सुरक्षा सर्वोपरि

(लेखक- विनोद सिंह 'तकियावाला')

– भारतीय प्रेस परिषद के दिशा-निर्देशों में निष्पक्ष पत्रकारिता, सुरक्षित रिपोर्टिंग, तथ्य सत्यापन और पेशेवर आचरण पर बल

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में पत्रकारिता की सार्थकता उसकी निष्पक्षता, विश्वसनीयता और जनहित के प्रति प्रतिबद्धता में निहित है। विगत दिनों में विरोध प्रदर्शन, धरना और जनआंदोलन लोकतांत्रिक व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा हैं ऐसे अवसरों पर प्रजातंत्र के प्राण व पहरী रहने जाने वाले पत्रकारों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। समाचार संग्रह हेतु घटनास्थल से सही जानकारी जुटाना, प्रदर्शनकारियों की माँगों को सामने लाना,प्रशासन की कार्रवाई का तथ्यपरक विवरण देना और आम जनता को वास्तविक स्थिति से अवगत कराना पत्रकारिता का महत्वपूर्ण दायित्व है। हालाँकि, इस दौरान पत्रकारों की सुरक्षा, पेशेवर मर्यादा और समाचारों की विश्वसनीयता भी उसनी ही महत्वपूर्ण है।इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रेस परिषद ने 14 अक्टूबर 2026 को आयोजित बैठक में विरोध प्रदर्शनों और जनसभाओं की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों के लिए विशेष दिशा-निर्देश अपनाए। परिषद ने 15 अक्टूबर 2026 को जारी प्रेस विज्ञप्ति में इन दिशा-निर्देशों की जानकारी देते हुए पत्रकारों की सुरक्षा, जिम्मेदार रिपोर्टिंग तथा मीडिया संस्थानों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया है। इनका उद्देश्य पत्रकारों को अपने पेशेवर दायित्वों का प्रभावी ढंग से निर्वहन करने में सहायता देना और संवेदनशील परिस्थितियों में संभावित जोखिमों को कम करना है। "पहचान और पेशेवर आचरण की जिम्मेदारी" – भारतीय प्रेस परिषद ने रिपोर्टिंग के दौरान पत्रकारों की पहचान और पेशेवर आचरण को महत्वपूर्ण माना है। दिशा-निर्देशों के अनुसार, पत्रकारों को अपने मीडिया संस्थान अथवा समाचार पत्र द्वारा जारी वैध पहचान पत्र साथ रखना चाहिए। जहाँ लागू हो, वहाँ प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) अथवा दिल्ली सूचना एवं प्रचार निदेशालय (डीआईए) का वैध मान्यता पत्र भी साथ रखना चाहिए। रिपोर्टिंग के दौरान पहचान पत्र स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना आवश्यक है, ताकि पुलिस और अन्य संबंधित अधिकारी जरूरत पड़ने पर पत्रकार की पहचान सुनिश्चित कर सकें। पत्रकारिता केवल घटनाओं को कैमरे में दर्ज करने अथवा समाचार

लिखने तक सीमित नहीं है। इसके साथ निष्पक्षता और पेशेवर मर्यादा बनाए रखना भी जरूरी है। विरोध प्रदर्शन के दौरान पत्रकारों को किसी पक्ष का समर्थन करने, आंदोलन में भाग लेने, टकराव भड़काने अथवा प्रदर्शनकारियों, विरोधी समूहों और पुलिस के काम में हस्तक्षेप करने से बचना चाहिए।तनावपूर्ण परिस्थितियों में संयम बनाए रखना और सुरक्षा के लिए जारी वैध निर्देशों का पालन करना आवश्यक है।पत्रकार की भूमिका किसी घटना का पक्षकार बनने की नहीं, बल्कि तथ्यों को सामने लाने की है। उसे अपनी रिपोर्टिंग के माध्यम से जनता को यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि घटनास्थल पर वास्तव में क्या हुआ, विभिन्न पक्षों की मांगें क्या हैं और प्रशासन की कार्रवाई का स्वरूप क्या है। यहीं निष्पक्ष पत्रकारिता की बुनियाद है। भीड़ के बीच सुरक्षा और सतर्कता जरूरी, प्रदर्शन स्थलों पर परिस्थितियाँ कभी भी बदल सकती हैं। शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान अचानक तनाव बढ़ने, भीड़ के अनियंत्रित होने अथवा प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न होने की आशंका रहती है। ऐसे में पत्रकारों को संभावित टकराव से उचित दूरी बनाकर रास्ते से प्रभावित क्षेत्र से बाहर निकलना चाहिए। समाचार को सबसे पहले प्रसारित करने अथवा विशिष्ट दृश्य प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में अपनी सुरक्षा को जोखिम में डालना उचित नहीं है। पत्रकारिता में तत्परता महत्वपूर्ण है, लेकिन जिम्मेदारी और विवेक उससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

रिपोर्टिंग के लिए घटनास्थल पर पहुंचने के बाद सुरक्षित निकास मार्गों की जानकारी प्राप्त करना भी जरूरी है।आसपास के निकास द्वार, खुली सड़कें, फुटपाथ और सुरक्षित स्थानों की पहचान आपातकालीन परिस्थितियों में उपयोगी हो सकती है। भीड़ के व्यवहार, शोर में अचानक बदलाव और संभावित टकराव के संकेतों पर ध्यान देना चाहिए।

यदि ऑसू गैस अथवा धुएँ का इस्तेमाल होता है,तो पत्रकारों को भीड़ के भीतर आगे बढ़ने के बजाय सुरक्षित रास्ते से प्रभावित क्षेत्र से बाहर निकलना चाहिए। समाचार को सबसे पहले प्रसारित करने अथवा विशिष्ट दृश्य प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में अपनी सुरक्षा को जोखिम में डालना उचित नहीं है। पत्रकारिता में तत्परता महत्वपूर्ण है, लेकिन जिम्मेदारी और विवेक उससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

*व्यक्तिगत सुरक्षा और प्राथमिक उपचार

की तैयारी*

प्रदर्शन स्थलों पर रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों को आवश्यक व्यक्तिगत सुरक्षा सामग्री साथ रखनी चाहिए। भारतीय प्रेस परिषद के दिशा-निर्देशों में प्राथमिक उपचार किट, आवश्यक व्यक्तिगत दवाइयाँ, पीने का पानी, अधिक प्रोटीन वाले हल्के खाद्य पदार्थ, टॉर्न, तैलिया अथवा हाथ साफ करने के लिए कपड़ा और आँखों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त चश्मा रखने की सलाह दी गई है।

संभावित खतरों का आकलन करने के बाद उपयुक्त सुरक्षा हेलमेट और शरीर की सुरक्षा से जुड़े उपकरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि, सुरक्षा उपकरणों का उद्देश्य जोखिम कम करना होना चाहिए, न कि पत्रकारों को अधिक खतरनाक परिस्थितियों में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना।

पत्रकारों को प्राथमिक उपचार की बुनियादी जानकारी प्राप्त करने और सुरक्षा उपकरणों का सही इस्तेमाल सीखने की आवश्यकता भी है। घटनास्थल पर किसी पत्रकार अथवा अन्य व्यक्ति के घायल होने की स्थिति में प्रारंभिक सहायता उपयोगी हो सकती है।

ऑसू गैस के गोले, पलेश-बैंग उपकरण और धुआँ उत्पन्न करने वाले ग्रेनेड जैसी वस्तुओं के मामले में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। पत्रकारों को इन्हें छूने, उठाने अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।इनमें गर्मी, विस्फोट अथवा खतरनाक अवशेषों का जोखिम हो सकता है।

मीडिया संस्थानों और पत्रकारों के बीच समन्वय पत्रकारों की सुरक्षा केवल उनकी व्यक्तिगत सतर्कता पर निर्भर नहीं करती। इसमें मीडिया संस्थानों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। भारतीय प्रेस परिषद ने समाचार कक्षों को सलाह दी है कि वे घटनास्थल पर रिपोर्टिंग करने गए पत्रकारों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखें। मीडिया संस्थान में एक जिम्मेदार संपर्क अधिकारी नामित किया जाना चाहिए, जो पत्रकारों की स्थिति पर नजर रख सके और आपातकालीन परिस्थितियों में आवश्यक सहायता के लिए समन्वय कर सके।रवर्तन और फ़ोलांस पत्रकारों की भी अपने किसी विश्वसनीय संपादक अथवा संपर्क व्यक्ति को घटनास्थल, रिपोर्टिंग योजना और संभावित वापसी के समय की जानकारी देनी चाहिए। इससे आपातकालीन परिस्थिति में उनकी स्थिति का पता लगाने और आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने में मदद मिल सकती है।

दया करने वालों की जय- जयकार होती है

हर व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाने के पीछे व्यवहारिकता एवं मानवीय मूल्यों को भूलता जा रहा है। रास्ते में अगर कोई मजबूर व्यक्ति दिख जाए तो कोई बेबसी प्रकट करने के लिए दो पल रुक जाए यही बड़ी बात होती है। बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो किसी के लिए अपना एक पल और एक रूपये तक खर्च करने में कंजूसी करते हैं। शायद इसलिए कि उन्हें लगता है, भला पीड़ित व्यक्ति उनका क्या नाता है। लेकिन ऐसा सोचने से पहले यह शब्द जरूर याद करना चाहिए कि वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र इस देश ने संसार को दिया है जिसका अर्थ है वसुधा यानी धरती पर रहने वाला हर व्यक्ति हमारा कुटुम्ब है। अगर विष्णु पुराण, श्रीमद्भगवत् पुराण अथवा अन्य कोई भी पुराण उठाकर देखेंगे तो पता चलेगा कि हम सभी मनुष्य मनु की संतान हैं। इस नाते हम सभी मनुष्य एक दूसरे के रिश्तेदार हैं। इस नाते हम सभी को अपने रिश्तेदारों की सहायता करनी चाहिए यही हमारा धर्म है। धर्म ग्रंथों में कहा भी गया है कि दया धर्म का मूल है। इसलिए हर व्यक्ति को बिना किसी लालच और स्वार्थ के जरूरत के समय आगे बढ़कर लोगों की मदद करनी चाहिए। जो ऐसा करते हैं उनका जयजयकार समाज ही नहीं ईश्वर भी करता है। दया करने वाला व्यक्ति कठिन समय आने पर भी अपना गुण नहीं खोता है। इसी का उदाहरण है मुगल बादशाह दारा। दारा को औरंगजेब ने बंदी बना लिया। बंदी

बना दारा जब शहर के बीच से गुजर रहा था तो उसकी स्थिति देखकर लोग तरस खा रहे थे लेकिन कोई मदद के लिए आगे नहीं आ रहा था। एक फकीर ने दारा की स्थिति को देखकर कहा कि, दारा तू जब भी हाथी पर बैठकर इस रास्ते जाता था तो मेरी झोली भरता था। आज क्या फकीर की झोली खाली रहेगी।

दारा ने नजर उठाकर उस फकीर की ओर देखा और अपने शरीर पर पड़ा दुशाला उठाकर फकीर की ओर फेंक दिया। दारा की बेबसी पर जो लोग सिर झुकाए खड़े थे सभी दारा की उदारता और दयालुता को देखकर जयजयकार करने लगे। दारा का झुका हुआ सिर गर्व से ऊपर उठ गया और औरंगजेब के सैनिकों का सिर शर्म से झुक गया। भले ही आप कभी तीर्थ स्थल न जाएं लेकिन जरूरत के समय लोगों की सहायता कर दें तो कर्द तीर्थ यात्रा का फल आपको घर बैठे मिल जाता है। भगवान कभी यह नहीं कहते कि लोगों को दबाकर कुचलकर मेरे मंदिर में आओ। जो लोग ऐसा करते हैं उनके मंदिर में प्रवेश करने पर भगवान मंदिर छोड़कर चले जाते हैं। दयालु व्यक्ति के मन में ईश्वर बसता है। मंदिर में तो उसके अंदर का प्रतिबिंब नजर आता है। दयालु व्यक्ति को तो घर में रखे शिव की तस्वीर में भी शिव की अनुभूति हो जाती है। जबकि धनार्जन में मस्त लोगों को तीर्थ स्थलों में भी ईश्वर की अनुभूति नहीं होती है।

जंगल के कानून से सबक सीखने की जरूरत

(लेखक- सनत जैन)

प्रकृति का सबसे बड़ा संदेश है, जियो और जीने दो। जंगल में रहने वाले पशु-पक्षियों और छोटे-से-छोटे जीव-जंतुओं का जीवन स्वतंत्रता, सहअस्तित्व और सभी के जीवन का सम्मान ही जीवन का आधार है। आश्चर्य यह है, जिस मनुष्य को बुद्धिमान, विवेकशील और सामाजिक प्राणी कहा जाता है, वही आज भौतिक सुविधाओं, सत्ता, संपत्ति और अहंकार के लिए प्रकृति तथा मानवता के लिये संकट बन गया है। जंगल में शेर, हाथी, हिरण, बंदर, पक्षी और असंख्य छोटे जीव रहते हैं। सबका जीवन जीने का अपना तरीका है। भोजन की तलाश में संघर्ष होता है, शिकारी और शिकार के बीच जीवन-मृत्यु का संघर्ष भी है। इसके

बाद भी प्रकृति के भीतर एक संतुलन हमेशा काम करता है। पशु अपनी आवश्यकताओं और भूख मिटाने के लिए संघर्ष करते हैं। उनकी भूख मिट जाती है, तो शिकार की जरूरत भी समाप्त हो जाती है। मनुष्यों की तरह धन-संपत्ति जमा करने, दूसरे जीवों के संसाधनों पर कब्जा करने या समूचे जंगल पर साम्राज्य स्थापित करने की प्रवृति उनमें नहीं होती है। जंगल में पानी के एक ही स्रोत से अलग-अलग प्रजातियों के जीव अपनी प्यास बुझाने वहां पहुंचते हैं। हालांकि वहां भी खतरे, प्रतिस्पर्धा और हिंसा से पूरी तरह मुक्ति नहीं होती, फिर भी प्रकृति के नियम सभी जीवों के अस्तित्व को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। समूह में रहने वाले सभी जीव अपनी संतानों और साथियों की रक्षा करते हैं। वे अपने जीवन

और भोजन के लिए संघर्ष करते हैं। मनुष्य की तरह विचारधारा, भौतिक सुख सुविधाओं, सत्ता के विस्तार और आखेट के नाम पर विनाश नहीं करते हैं। इसके विपरीत, आज दुनिया का बड़ा हिस्सा सत्ता के अहंकार, आर्थिक असमानता और वर्चस्व की लड़ाई में उलझा हुआ है। रूस-यूक्रेन युद्ध हो या इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष, अमेरिका और ईरान के बीच तनाव हो या दुनिया के अन्य क्षेत्रों में जारी हिंसा हो, इसकी कोमल आम नागरिकों, बच्चों, महिलाओं और निर्दोष लोगों को चुकानी पड़ रही है। सत्ता में बने रहने की लालच और शक्ति प्रदर्शन की राजनीति ने मानव जीवन को आकड़ों और पूंजी के रूप में बदल दिया है। प्रश्न यह है कि जिस सत्ता का उद्देश्य जनता की सुरक्षा और कल्याण होना चाहिए, वही यदि

लोगों की मृत्यु और विनाश का कारण बन लगे, तो उसकी नैतिकता और उसके अस्तित्व पर सवाल क्यों नहीं उठना चाहिए? पिछले कुछ दशकों में पूंजीवादी व्यवस्था का विस्तार, संसाधनों पर नियंत्रण की प्रतिस्पर्धा और धन के असमान वितरण ने सामाजिक विषमता की समस्या को और गंभीर बना दिया है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर पूंजीवादी गतिविधि विनाशकारी है, बल्कि चिंता उस व्यवस्था से है, जिसमें मुनाफा मानवता से ऊपर हो जाए, संपत्ति कुछ हाथों में सिमटती चली जाए। गरीब की कठिनाइयां लगातार बढ़ती रहे। उसे 2 वक का भोजन, कपड़ा और रहने के लिये घर ना मिले। लोकतंत्र में सत्ता जनसेवा का माध्यम होना चाहिए, जब कुर्सी ही शासक का सर्वोच्च लक्ष्य बन जाए, तब संस्थाएं कमजोर होती हैं,

सामाजिक विश्वास टूटता है, सामाजिक व्यवस्था कमजोर होती है। नागरिक अपने ही तंत्र के सामने असहाय हो जाते है। तभी जीवन को बचाने क्रांति का शंखनाद होता है। इसका प्रभाव केवल राजनीति और अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं रहता है। जंगलों की कटाई, नदियों का प्रदूषण, वायु की गिरती गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हमारे विकास मॉडल पर गंभीर प्रश्न खड़े कर रहे हैं। मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से अंतरिक्ष तक अपनी पहुंच बनाई है, लेकिन अपनी पृथ्वी को सुरक्षित नहीं रख पा रहे है। प्राकृतिक आपदायें बढ़ती जा रही हैं। प्रकृति से अधिक शक्तिवान बनने की हमारी महत्वाकांक्षा कहीं हमें अपने ही अस्तित्व के विरुद्ध खड़ा तो नहीं कर रही?

हमें यह भी समझना होगा कि जंगल का जीवन पूरी तरह अहिंसक या भयमुक्त नहीं है। वहां भी शिकार, संघर्ष, जीवन और मृत्यु है। जंगल के सभी जीव हमें एक महत्वपूर्ण सीख देते हैं। जीवन का संतुलन किसी एक जीव के असीमित वर्चस्व से नहीं, बल्कि अनेक जीवों के सहअस्तित्व से बनता है। सभी जीव एक-दूसरे के सहयोगी और एक मनुष्य के पास विवेक, कानून, विज्ञान और नैतिकता जैसे साधन हैं। इसलिए मानव जीवन को कर्मफल से जोड़ा जाता है। अपेक्षा भी अधिक है। मानवों की हिंसा को प्रकृति का नियम बताकर उचित ठहराने का कोई अधिकार नहीं है। आज विश्व के नेताओं, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और सभी देशों की सरकारों को वर्तमान स्थिति पर आत्ममंथन करना चाहिए।



अमेरिका में भारतीय निवेश 330 अरब डॉलर पार

एस्सार का 15 अरब डॉलर का इस्पात संयंत्र भी सूचीबद्ध

व्हाइट हाउस ने अमेरिका में खरबों डॉलर के विदेशी निवेश की सूची जारी की है, जिसमें भारत 330 अरब डॉलर से अधिक के महत्वपूर्ण निवेश के साथ शीर्ष निवेशकों में शामिल हो गया है। इस सूची में भारत की दो प्रमुख प्रविष्टियां दर्शाई गई हैं, जो अमेरिका की अंतर्भाव्यताओं में उसके बढ़ते विश्वास को रेखांकित करती हैं। व्हाइट हाउस के यूट्यूब चैनल पर लगातार प्रदर्शित हो रही इस सूची में भारत का कुल निवेश 330 अरब डॉलर से अधिक दर्ज किया गया है, जिसमें 310 अरब डॉलर और 20.5 अरब डॉलर की दो अलग-अलग प्रविष्टियां शामिल हैं। इस सूची में आयोवा में एस्सर समूह के मेसाबी मेटालिक्स द्वारा घोषित 15 अरब डॉलर के इस्पात संयंत्र की भी प्रमुखता से दर्शाया गया है। व्हाइट हाउस ने सोशल मीडिया पर एक एक्स पर पोस्ट कर खरबों डॉलर के सुखद प्रवाह को स्वागत किया है। उल्लेखनीय है कि मार्च में रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा टेक्ससास में एक तेल रिफाइनरी स्थापित करने के लिए 300 अरब डॉलर के निवेश की घोषणा की गई थी, जिसे इस सूची में शामिल किया गया है। मई में, सिलिकॉन वैली एंजेलस्ट्रैट समिट के दौरान भी भारतीय उद्योग जगत ने अमेरिका में 20.5 अरब डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता जताई थी।

हल्दी की कीमतों में रिकॉर्ड उछाल, सूखे और अल नीनो का असर

पिछले एक साल में 80 फीसदी की रिकॉर्ड बढ़ोतरी

नई दिल्ली ।

भारतीय रसोई का अहम हिस्सा, हल्दी की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई हैं। पिछले एक साल में 80 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी के साथ, हाज़िर बाज़ार में यह 23,000 रुपए प्रति क्विंटल के पार बिक रही है, जबकि वायदा बाज़ार में यह 24,500 रुपए तक पहुंच गई है। इस अभूतपूर्व तेज़ी का मुख्य कारण मांग में तेज़ी और अल नीनो के कारण घटती आपूर्ति है। पिछले एक महीने में हल्दी के दाम 18 फीसदी से अधिक बढ़े हैं। किसान और स्टॉकिस्ट बेहतर दाम की उम्मीद में माल रोक रहे हैं, साथ ही पिछले सीजन के मुकाबले कैरी-फॉरवर्ड स्टॉक में 5 लाख बॉरे की कमी भी एक कारण है। अल नीनो के प्रभाव से सूखे की स्थिति और फसल पर इसके प्रतिकूल असर की आशंका ने कीमतों को और भड़का दिया है। कर्नाटक में लगभग 13,446 हेक्टेयर हल्दी की फसल को नुकसान पहुंचा है, जिसकी कीमत 188.24 करोड़ रुपए आंकी गई है। महाराष्ट्र, तेलंगाना और तमिलनाडु जैसे प्रमुख हल्दी उत्पादक क्षेत्रों में सूखे के कारण बुवाई का रकबा 20-30 फीसदी घट गया है, जिससे अगले साल उत्पादन में भारी गिरावट की आशंका है। वैश्विक बाज़ार में बढ़ती मांग के बावजूद, आपूर्ति की कमी से जुलाई 2026 में निर्यात 10 फीसदी घटा है, जो मौजूदा संकट को और गहरा रहा है। यह स्थिति उपभोक्ताओं और निर्यातकों दोनों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है।

एचडीएफसी ने पेश किया नया भारत इक्विटी ईटीएफ

एक निवेश में मिलेगी बाज़ार की डाइवर्सिटी

नई दिल्ली ।

एचडीएफसी म्यूचुअल फंड ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर अपना नया एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ), एचडीएफसी एफटीएसई इंडिया इक्विटी ईटीएफ सूचीबद्ध कर दिया है। यह नया फंड निवेशकों को एक ही निवेश के माध्यम से भारतीय शेयर बाज़ार की कई प्रमुख कंपनियों में विविधीकृत एक्सपोजर हासिल करने का एक आसान तरीका प्रदान करेगा, जिससे उन्हें अलग-अलग शेयरों में निवेश की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह ईटीएफ एफटीएसई इंडिया इक्विटी इंडेक्स को ट्रैक करेगा, जो एफटीएसई इंडिया ऑल कैप इंडेक्स के कुल बाज़ार मूल्य का लगभग 90 फीसदी कवर करता है। इसका अर्थ है कि निवेशक विभिन्न उद्योग की भारतीय कंपनियों में अपना पैसा लगा सकेंगे, जिससे उनके पोर्टफोलियो में विविधता आएगी। एक ओपन-एंडेड ईटीएफ होने के नाते, इसका प्राथमिक उद्देश्य इंडेक्स के प्रदर्शन के करीब रिटर्न देना है, जिसमें शेयरों का चुनाव इंडेक्स के नियमों के आधार पर होगा।

एचडीएफसी के एक अतिरिक्त अधिकारी ने इस अवसर पर कहा कि यह ईटीएफ ऐसे निवेशकों की ज़रूरत पूरी करेगा जो भारतीय शेयर बाज़ार की वृद्धि का लाभ आसान और पारदर्शी तरीके से उठाना चाहते हैं। एस लिस्टिंग के साथ, एचडीएफसी म्यूचुअल फंड ने अपने पैसिव निवेश उत्पादों की श्रृंखला का विस्तार किया है।

ट्रंप का यू-टर्न-रूसी तेल खरीदारों पर लगाए शुल्क तुरंत माफ

वाशिंगटन ।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूसी तेल खरीदने वाले देशों पर नए अमेरिकी कानून के तहत लगाए गए शुल्कों को तुरंत माफ कर दिया है, जिससे भारत और चीन जैसे प्रमुख आयातकों को बड़ी राहत मिली। यह फैसला 100 फीसदी शुल्क लागू होने से ठीक एक दिन पहले आया और अमेरिकी विदेश मंत्री की भारत यात्रा के मद्देनजर महत्वपूर्ण है। ट्रंप ने हाल ही में एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए, जिसमें लिंडसे ओ. ग्राहम सेंकशनस रशिशा एंड ईरान एक्ट 2026 को लागू किया गया था। इस कानून में रूसी तेल और गैस के शीर्ष पांच खरीदारों से आने वाले सामानों पर 100 प्रतिशत तक शुल्क लगाने का प्रावधान था, जो 18 अक्टूबर को समाप्त हो रही समय-सीमा के बाद नई खरीद पर लागू होना था। यह कानून रूसी उत्पादों पर 500 फीसदी तक शुल्क का भी प्रावधान करता था। हालांकि, उसी आदेश की धारा 4 का उपयोग करते हुए ट्रंप ने इन सभी शुल्कों को तुरंत निलंबित कर दिया। उन्होंने लिखा, 'मैं ग्राहम एक्ट की धारा 112 और 113, या इस आदेश में बताए गए किसी भी शुल्क को लागू करने से झूट देता हूँ (माफ करता हूँ)। यह झूट तब तक प्रभावित रहेगी जब तक राष्ट्रपति या संबंधित मंत्री आगे कोई और कदम उठाने का निर्णय नहीं लेते। इस आदेश में किसी देश का नाम नहीं लिया गया है, लेकिन इसका सीधा फायदा रूसी तेल के बड़े खरीदारों को मिला है।

नई दिल्ली । राष्ट्रीय राजधानी में सूत्रधार को सोना और चांदी के भाव का स्थिर रहे, जिससे उतार-चढ़ाव भरे सप्ताह के बाद निवेशकों को हल्की राहत मिली। हालांकि, भारतीय रुपए की लगातार मजबूती ने बहुमुल्य धातुओं में किसी बड़े सुधार की गुंजाइश को सीमित कर दिया, जहां 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 1,49,900 रुपए प्रति 10 ग्राम और चांदी 2.15 लाख रुपए प्रति किलोग्राम पर टिकी रह गई। यह स्थिरता ऐसे समय में की गई जब साहस भरो में सोने की औसत कीमत 1,54,00 रुपए (तीन प्रतिशत की बड़ी गिरावट देखी गई, जब चांदी 13,50,00 रुपए (चार प्रतिशत) तक सरसी हुई। हालांकि, विश्लेषकों के मुताबिक धातुओं में निचले स्तर से नुकसान भरणपाई काफ़ी प्रयास कर लेविकन रुपए की लगातार मजबूती के कारण है।

रविवार 18 अक्टूबर 2026

शेयर बाजार थुरुआती गिरावट के बाद जोरदार तेजी से हुआ बंद

वैश्विक चिन्ताओं और महंगाई ने बढ़ाई निवेशकों की बेचनी

मुंबई ।

बीते सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में निवेशकों को खासा उतार-चढ़ाव देखने को मिला। वैश्विक चिन्ताओं, विदेशी निवेश की निकासी और बढ़ती महंगाई के शुरुआती दबाव के बावजूद, बाजार ने मजबूत वापसी करते हुए सप्ताह का समापन बढ़त के साथ किया। बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी, दोनों सूचकांकों ने सप्ताह के अंत तक महत्वपूर्ण उछाल दर्ज की, जिससे निवेशकों का भरोसा मजबूत हुआ। सप्ताह की शुरुआत

सोमवार को भारी गिरावट के साथ हुई। वैश्विक चिन्ताओं, विदेशी निवेश की निकासी और मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के कारण सेंसेक्स 547 अंक से अधिक गिरकर 71,924 पर और निफ्टी 157 अंक फिसलकर 22,363 पर बंद हुआ। कमजोर निवेशक धारणा और मुद्रास्फीति की चिन्ताओं ने बाजार को और नीचे खींचा। हालांकि, मंगलवार को बाजार में जोरदार वापसी हुई। शुरुआती गिरावट के बावजूद सेंसेक्स 1,109 अंक उछलकर 73,033 पर और निफ्टी 358 अंक बढ़कर

22,721 पर बंद हुआ। रुपया भी डॉलर के मुकाबले मजबूत हुआ। बुधवार को एक बार फिर उतार-चढ़ाव का दौर देखा गया और सेंसेक्स 251 अंक गिरकर 72,781 पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 22,688 पर रहा। इस दिन कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और विदेशी निवेश की लगातार निकासी ने बाजार पर दबाव बनाए रखा। सप्ताह के अंतिम दो दिनों में भारतीय शेयर बाजार ने जबरदस्त तेजी दर्ज की।

गुरुवार को बैंक, आईटी और रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसे प्रमुख

शेयरों में भारी खरीदारी और कच्चे तेल की कीमतों में नरमी के चलते सेंसेक्स 1,533 अंक की विशाल बढ़त के साथ 74,315 पर पहुंच गया, जबकि निफ्टी 374 अंक बढ़कर 22,997 पर बंद हुआ। यह तीन हफ्ते का उच्च स्तर था। शुक्रवार को भी यह तेजी जारी रही। आईटी शेयरों में जोरदार खरीदारी और मजबूत वैश्विक रूझानों के दम पर सेंसेक्स 413 अंक और निफ्टी 148 अंक की बढ़त के साथ क्रमशः 74,729 और 23,146 पर सप्ताह का समापन किया।

हरियाणा में 4000 करोड़ का निवेश, स्वीडन यात्रा ने खोले नए द्वार

सीएम सैनी की पहल से व्यापार, रोजगार के अवसर सृजित

चंडीगढ़ ।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की हालिया स्वीडन यात्रा राज्य के लिए 4,000 करोड़ रुपये के महत्वपूर्ण निवेश प्रस्ताव लेकर आई है। हाल ही में जारी एक आधिकारिक बयान के अनुसार, स्वीडिश कंपनियों के साथ आशय पॉरि (एलओआई) पर हस्ताक्षर किए गए, जो हरियाणा और स्वीडन के बीच व्यापार, निवेश और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसरों को बढ़ावा देंगे। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल बुधवार को चार दिवसीय यात्रा पर स्वीडन पहुंचा था। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य हरियाणा में विदेशी निवेश आकर्षित करना, वैश्विक औद्योगिक साझेदारियों को मजबूत करना और प्रौद्योगिकी तथा टिकाऊ विकास में सहयोग को बढ़ावा देना था। मुख्यमंत्री सैनी ने कहा कि यह यात्रा वैश्विक निवेश मानचित्र पर हरियाणा की स्थिति को और मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम है। यात्रा के दौरान गुरुग्राम और स्टॉकहोम के बीच एक ऐतिहासिक शहर-से-शहर सहयोग समझौता भी हुआ। इस समझौते के तहत दोनों शहर तकनीकी नवोन्मेष, स्मार्ट सिटी समाधान, टिकाऊ शहरी विकास, ज्ञान के आदान-प्रदान और निवेश प्रोत्साहन पर मिलकर काम करेंगे, जिससे दीर्घकालिक साझेदारी को बल मिलेगा। इसके अतिरिक्त, बयान में यह भी कहा गया कि खुदरा और भंडारण क्षेत्रों में 1,000 करोड़ रुपये के आशय पत्रों पर भी सहमति बनी है, जो राज्य में इन क्षेत्रों के विकास को गति प्रदान करेंगे। यह पहल हरियाणा को वैश्विक मंच पर एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करती है।

लैंसकार्ट की चमक

फौसदारी चढ़ा, निवेशकों

म्युचुअल फंडों और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश

नई दिल्ली ।

जापानी निवेश फर्म सॉफ्टबैंक द्वारा अपनी हिस्सेदारी कम करने के बावजूद, आईवियर रिटेलर लेंसकार्ट सॉल्यूशंस पर निवेशकों का भरोसा अटूट बना हुआ है। मई 2026 में लॉक-इन अवधि समाप्त होने के बाद सॉफ्टबैंक और अन्य विदेशी प्राइवेट इक्विटी निवेशकों द्वारा बेचे गए सभी शेयरों को म्युचुअल फंडों और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने हाथों-हाथ खरीद लिया है, जो कंपनी के मजबूत भविष्य की विकास संभावनाओं में गहरे विश्वास को दर्शाता है। आईवियर रिटेलर लेंसकार्ट ने एक बार फिर निवेशकों का दिल जीत लिया है, जब जापानी निवेश फर्म सॉफ्टबैंक और अन्य विदेशी प्राइवेट इक्विटी निवेशकों ने अपनी

हिस्सेदारी घटाई।

इन बड़े निवेशकों के बाहरी निकलने के बावजूद, घरेलू म्युचुअल फंडों और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने उनके बेचे गए सभी शेयरों को हाथों-हाथ खरीद लिया, जो कंपनी की मजबूत बुनियाद और आकर्षक भविष्य के प्रति उनके भरोसे को उजागर करता है।

सितंबर 2026 के आंकड़ों के अनुसार, एसबीआई एग्रेसिव हाइब्रिड फंड लेंसकार्ट में सबसे बड़ा फंड निवेशक बनकर उभरा है, जिसके पास कंपनी की 3 फीसदी हिस्सेदारी है।

इसके बाद कोटक टेक्नॉलॉजि फंड (1.76 फीसदी) और एचएसबीसी मल्टी कैप फंड (1.34 फीसदी) का स्थान आता है।

कच्चे तेल में फिर भारी उछाल, ब्रेंट क्रूड 110 डॉलर के पार

हूती हमले और रूस-यूक्रेन युद्ध से वैश्विक आपूर्ति प्रभावित होने की आशंका

नई दिल्ली ।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर तेज उछाल दर्ज किया गया है। मई के बाद पहली बार ब्रेंट क्रूड का भाव 110 डॉलर प्रति बैरल के स्तर को पार कर गया, जबकि अमेरिकी क्रूड में भी लगभग 4

फीसदी की तेजी आई है। वैश्विक आपूर्ति में जल्द सुधार की उम्मीदें कमजोर पड़ने और विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव ने ऊर्जा बाजार की चिंता बढ़ा दी है। तेल की बढ़ती कीमतों के पीछे कई कारण हैं। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के सऊदी अरब के तेल ठिकानों पर हमले और रूस-यूक्रेन युद्ध में ऊर्जा संचयनों व रिफाइनरियों को लगातार निशाना बनाए जाने से वैश्विक तेल आपूर्ति बाधित होने का खतरा मंडरा रहा



है। रूस की रियाजान तेल रिफाइनरी पर हमले के बाद परिचालन रोकना पड़ा, जिससे रूसी डीजल आपूर्ति को लेकर

अनिश्चितता और बढ़ गई है। काला सागर क्षेत्र में तनाव भी वैश्विक तेल एवं ईंधन आपूर्ति पर दबाव बनाए हुए है।

यस बैंक एटी-1 बॉन्ड मामला- सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद दो एमएफ ने निवेश रोका

कोटक और निप्पॉन लाइफ ने कुछ डेट फंडों में नए निवेश पर लगाई अस्थायी रोक

नई दिल्ली ।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा यस बैंक के अतिरिक्त टियर-1 (एटी-1) बॉन्ड को बहाल करने के फैसले के बाद, कोटक महिंद्रा एएमसी और निप्पॉन लाइफ इंडिया एसेट मैनेजमेंट ने अपने कुछ डेट म्यूचुअल फंड योजनाओं में नए निवेश पर अस्थायी रोक लगा दी है। यह कदम निवेशकों के हितों की सुरक्षा और पुरानी एनएवी में अचानक संभावित बढ़ोतरी के मद्देनजर उठाया गया है, ताकि नए निवेशकों के प्रवेश से पुराने निवेशकों के लाभ में कमी न आए। सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाई कोर्ट के उस आदेश को बरकरार रखा है, जिसमें यस बैंक के इन बॉन्डों को बड़े खाते में डालने के फैसले को रद्द किया गया था। इस फैसले से उन म्यूचुअल फंड योजनाओं के नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) में बढ़ोतरी की उम्मीद है, जिनके पास ये बॉन्ड थे और जिनका मूल्य अभी तक शून्य माना गया था। कोटक महिंद्रा

एएमसी ने कोटक मीडियम टर्म फंड और कोटक क्रेडिट रिस्क फंड में नए निवेश पर रोक लगाई है, जिनका कुल परिसंपत्तियां 2,680 करोड़ रुपये हैं। इसी तरह, निप्पॉन लाइफ इंडिया एसेट मैनेजमेंट ने भी अपने इंडिया रिटायरमेंट फंड की वैल्व क्रियानेवा और इन्कम जेनरेशन योजनाओं में नया निवेश लेना बंद कर दिया है। फंड हाउसों ने यह एहतिता की कदम इसलिए उठाया है ताकि नए निवेशक, जो बड़ी हुई एनएवी का लाभ उठा सकते हैं, उनके प्रवेश से पुराने निवेशकों को मिलने वाले संभावित लाभ में कमी न आए। फिलहाल, दोनों फंड हाउस सुप्रीम कोर्ट के फैसले की समीक्षा कर रहे हैं और बॉन्ड के सटीक मूल्यांकन को लेकर स्पष्टता का इंतजार है। मार्च 2020 में यस बैंक के पुनर्गठन के दौरान 8,415 करोड़ रुपये के इन एटी-1 बॉन्ड को बड़े खाते में डाल दिया गया था, जिसे जनवरी 2023 में बॉम्बे हाई कोर्ट ने रद्द कर दिया था।

तैयार 3

विदेशी मुद्रा भंडार में रिकॉर्ड गिरावट

- रुपए को बचाने के लिए आरबीआई की कवायद जारी

नई दिल्ली ।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार पांचवें हफ्ते बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के ताजा आंकड़ों के अनुसार, 9 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 8.6 अरब डॉलर घटकर 726 अरब डॉलर रह गया। यह गिरावट मुख्य रूप से रुपये को घटकर के मुकाबले अत्यधिक गिरने से बचाने के लिए आरबीआई द्वारा बाजार में लगातार डॉलर बेचने के कारण हुई है। गौरतलब है कि 4 सितंबर को 785.71 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने के बाद से पिछले पांच हफ्तों में विदेशी मुद्रा भंडार में करीब 59.7 अरब डॉलर की भारी कमी आई है। विदेशी मुद्रा भंडार में इस बड़ी गिरावट की सबसे बड़ी वजह रुपये पर बना दबाव है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें लगातार ऊंची बनी हुई हैं, साथ ही विदेशी निवेशकों की बिकवाली और डॉलर की बढ़ती वैश्विक मांग के कारण रुपये पर लगातार दबाव बढ़ रहा है। आईडीएमएफ़ी फ़ंड बैंक की एक अर्थशास्त्री ने बताया कि आरबीआई ने इस सप्ताह के दौरान लगभग 8 अरब डॉलर बेचे, हालांकि विदेशी मुद्रा के मूल्य में बदलाव से कुछ हद तक कुल गिरावट कम रही। विदेशी मुद्रा भंडार के विभिन्न घटकों पर गजर डालें तो, विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 7.14 अरब डॉलर घटकर 597.61 अरब डॉलर रह गईं, जो कुल भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा है। उसके अलावा, सोने का भंडार भी 1.32 अरब डॉलर घटकर 105.09 अरब डॉलर पर आ गया।

लेंसकार्ट की चमक बरकरार, शेयर 43 फीसदी बढ़ा, निवेशकों ने की बंपर खरीदारी

नई दिल्ली ।

जापानी निवेश फर्म सॉफ्टबैंक द्वारा अपनी हिस्सेदारी कम करने के बावजूद, आईवियर रितेलर लेंसकार्ट सॉल्यूशंस पर निवेशकों का भरोसा अटूट बना हुआ है। मई 2026 में लॉन्ग-इन अवधि समाप्त होने के बाद सॉफ्टबैंक और अन्य विदेशी प्राइवेट इक्विटी निवेशकों द्वारा बेचे गए सभी शेयरों को म्यूचुअल फंडों और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने हाथों-हाथ खरीद लिया है, जो कंपनी की मजबूत वित्तीय प्रदर्शनों और भविष्य की विकास संभावनाओं में गहरे विश्वास को दर्शाता है। आईवियर रितेलर लेंसकार्ट ने एक बार फिर निवेशकों का दिल जीत लिया है, जब जापानी निवेश फर्म सॉफ्टबैंक और अन्य विदेशी प्राइवेट इक्विटी निवेशकों ने अपनी हिस्सेदारी घटाई।

इन बड़े निवेशकों के बाहर निकलने के बावजूद, घरेलू म्यूचुअल फंडों और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने उनके बेचे गए सभी शेयरों को हाथों-हाथ खरीद लिया, जो कंपनी की मजबूत बुनियाद और आकर्षक भविष्य के प्रति उनके भरोसे को उजागर करता है।

सितंबर 2026 के आंकड़ों के अनुसार, एस्बीआई एग्रेसिव हाइब्रिड फंड लेंसकार्ट में सबसे बड़ा फंड निवेशक बनकर उभरा है, जिसके पास कंपनी की 3 फीसदी हिस्सेदारी है। इसके बाद कोटक टेक्नॉलजी फंड (1.76 फीसदी) और एचएसबीसी मल्टी कैप फंड (1.34 फीसदी) का स्थान आता है।

निवेशकों के इस मजबूत भरोसे का असर शेयर बाजार में भी देखने को मिला है। शुक्रवार को लेंसकार्ट का शेयर 0.59 फीसदी की बढ़त के साथ 646.5 रुपये पर बंद हुआ। पिछले एक साल में कंपनी के शेयर में 43.4 फीसदी की शानदार तेजी आई है, जबकि इसी अवधि में निफ्टी 50 में 11.7 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है।

विश्लेषकों का मानना है कि लेंसकार्ट के शेयर की यह तेजी केवल बाजार के अत्यधिक उत्साह का परिणाम नहीं है, बल्कि यह कंपनी की कमाई में ठोस वृद्धि और भविष्य की मजबूत संभावनाओं को दर्शाती है। एक रिपोर्ट बताती है कि दिसंबर 2025 के बाद से शेयर का दो साल आगे का पीई मल्टीपल केवल 8 फीसदी बढ़ा है, जबकि वित्त वर्ष 2027-28 के लिए मुनाफे के अनुमानों को 27-30 फीसदी तक बढ़ा दिया गया है। कंपनी के नवीनतम वित्तीय परिणाम भी इस बात की पुष्टि करते हैं; जून तिमाही में लेंसकार्ट का राजस्व बढ़कर 2,710 करोड़ रुपये हो गया।

इस प्रकार, सॉफ्टबैंक जैसे शुरुआती निवेशकों के बाहर निकलने के बावजूद, लेंसकार्ट अपने समदर विदेशी प्रदर्शन और आकर्षक विकास संभावनाओं के दम पर नए संस्थागत निवेशकों को लगातार आकर्षित कर रहे हैं। यह निवेशकों के बीच कंपनी की दीर्घकालिक क्षमता और बाजार में बढ़ती पकड़ में गहरे विश्वास को दर्शाता है, जिससे यह आने वाले समय में भी एक मजबूत और टिकाऊ खिलाड़ी बनी रहेगी।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस का मुनाफा दूसरी तिमाही में 18 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली ।

बजाज हाउसिंग फाइनंस का मुनाफा चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में 18 प्रतिशत बढ़कर 757 करोड़ रुपये रहा। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी का मुनाफा 643 करोड़ रुपये था। कंपनी ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि वित्त वर्ष 2026-27 की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) में उसकी कुल आय 18.3 प्रतिशत बढ़कर 3,251 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 2,748 करोड़ रुपये थी। बजाज हाउसिंग फाइनेंस की शुद्ध व्ययज आय सितंबर तिमाही में 10 प्रतिशत बढ़कर 1,055 करोड़ रुपये हो गई, जो वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में 956 करोड़ रुपये थी। कंपनी का प्रबंधन अर्थीन परिसंपत्ति (एयूसएम) 30 सितंबर, 2026 तक 25 प्रतिशत बढ़कर 1.58 लाख करोड़ रुपये हो गई। पिछले साल इसी तारीख को यह 1.27 लाख करोड़ रुपये थी।

महंगाई ने फीकी की त्योहारों की मिठास, मिठाइयां 15 फीसदी तक महंगी

चीनी, दूध, मेवे और रसोई गैस महंगा; ग्राहक और दुकानदार दोनों परेशान

नई दिल्ली ।

इस त्योहारों मौसम में मिठाइयों की मिठास पर महंगाई का साया छा रहा गया है। चीनी, दूध, मेवे और रसोई गैस सहित प्रमुख सामग्रियों की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण देश भर में मिठाइयों के दाम पिछले साल के मुकाबले औसतन 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ गए हैं, जिससे ग्राहकों की जेब पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। त्योहारों का उत्साह जहां एक ओर बाजारों में रौनक ला रहा है, वहीं दूसरी ओर मिठाइयों की बढ़ती कीमतें उपभोक्ताओं की चिंता बढ़ा रही हैं। चीनी, दूध, मेवे और वाणिज्यिक एलपीजी सिलिंडर जैसे प्रमुख सामग्रियों की लागत में अप्रत्याशित छछाल के कारण देश भर में मिठाइयों की कीमतें 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। उत्तर भारत की मावे वाली बर्फी से लेकर दक्षिण के लड्डू और कोलकाता के संदेशे तक, हर नोकप्रिय मिठाई महंगी हुई है। मिठाई बनाने में सबसे अहम चीनी की कीमतें 3-4 महीने पहले के 44 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर अब 60 रुपये के पार पहुंच गई हैं। इसी तरह, गाय का दूध पिछले साल की तुलना में करीब 30 प्रतिशत महंगा होकर 42 रुपये प्रति लीटर बिक रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि असमान मौसमीय बारिश और पशु आहार की बढ़ती कीमतों के कारण दुध उत्पादन प्रभावित हुआ है, जिससे इसकी कीमतें ऊंची बनी रहेंगी।

मेवे, कानू और मक्खन जैसी सामग्री भी औसतन 15 प्रतिशत तक महंगी हुई हैं, जिसका एक कारण पश्चिम एशिया में युद्ध और बढ़ते कंटेनर भाड़े को बताया जा रहा है। इस बढ़ती लागत का असर मिठाई विक्रेताओं पर भी पड़ रहा है। उत्तरी कोलकाता में कुछ प्रतिष्ठान जैसे गिरिश चंद्र दे एंड नकूर चंद्र नंदी अभी भी लागत का बोझ खुद उठा रहे हैं, जबकि ओडिशा में मिठाइयों की खुदरा कीमतों में 25 से 30 रुपये प्रति किलोग्राम की वृद्धि जरी कर गई।



दुनिया के इस खूबसूरत गांव में मौजूद है फाइव स्टार होटल जैसी सुविधाएं, फिर भी नहीं है कोई रहने वाला

किजोंग-डोंग गांव साउथ कोरिया और नॉर्थ कोरिया के मिलिटीरहित जोन में स्थित है। साल 1953 में कोरियन वॉर के बाद हुए युद्ध विराम के दौरान इस गांव को बनाया गया था। कई लोग इस गांव को प्रोपगेंडा विलेज कहते हैं। लोगों का ये मानना है कि इस गांव का निर्माण इसलिए कराया गया ताकि उथ कोरिया में रह रहे लोगों को ऐसा लगे कि यहां के लोगों की लाइफ काफी लगजरी है।

किजोंग-डोंग का इतिहास

किजोंग-डोंग गांव के निर्माण का किस्सा भी काफी रोचक है। दरअसल,

उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया के बीच जब कोरियाई युद्ध की अनौपचारिक समाप्ति हुई, उसी समय इस गांव का निर्माण हुआ। तीन साल तक चले इस युद्ध में 30 लाख से ज्यादा लोग मारे गए थे। इस दोनों देशों को अलग करने वाले क्षेत्र को डिमिलिट्राइज एरिया के रूप में जाना जाता है। युद्ध के दौरान दोनों देशों ने यहां से अपने नागरिकों को हटा दिया था। युद्ध विराम की घोषणा के समय यह तय किया गया कि दोनों देश सीमा पर सिर्फ एक ही गांव को बरकरार रख सकते थे या फिर नया गांव बसा सकते थे। ऐसे



प्रकृति की खूबसूरत कारीगरी पंख

पंखियों को उड़ने के लिए पंखों का तोहफा देने वाले नेचर ने वाकई अद्भुत कारीगरी दिखाई है। आओ इन पंखों को जानें और करीब से।

पर, पर हैं क्या?

पंख, पर या फेदर्स असल में पंखियों की ऊपरी त्वचा यानी स्किन पर उगने और उसे कवर करने वाली संरचना होते हैं। साइंस की भाषा में कहा जाए तो यह एपिडर्मिस के ऊपर होने वाली ग्रोथ है। साइंस यह भी कहता है कि रेप्टाइल्स के शरीर पर पाए जाने वाले स्केल्स ही असल में पंखियों के शरीर पर पंखों के रूप में विकसित हुए हैं। पंखियों के अलावा ये कुछ अन्य प्राणियों के शरीर पर भी पाए जाते हैं। वहां इनका रूप भी अलग हो सकता है। पंख भी नाखून और बालों की ही तरह कैराटिन नाम के प्रोटीन से बनते हैं।

उड़ो और बचो भी

पंख केवल उड़ान भरने में ही पंखियों की मदद नहीं करते। प्रकृति ने इन्हें इस तरह से बनाया है कि ये पंखियों के लिए रेनकोट भी बनते हैं, दुश्मन से बचाव का साधन भी और हर पंखी की अपनी पहचान का माध्यम भी। साथ ही ये तापमान को नियंत्रित रखने में भी मदद करते हैं। पंखों की रचना और रंगों को देखकर मेल-फीमेल पक्षी का पता भी लगाया जा सकता है। पंखियों के परों को अलग-अलग आकार-प्रकार के आधार पर कई श्रेणियों में बांटा जाता है।

रंगों का मजेदार विज्ञान

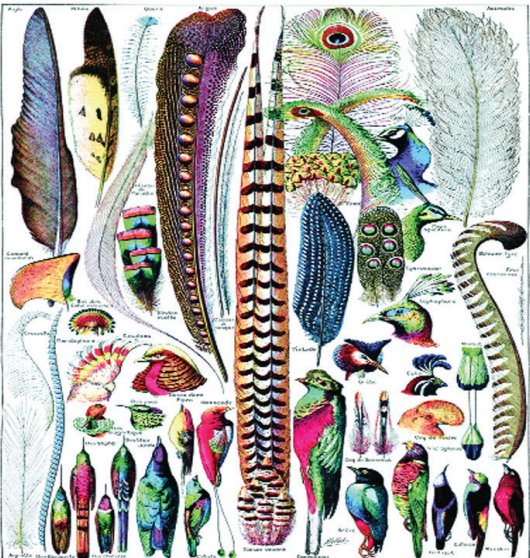
पंखियों के पर किएटिविटी के मामले में भी प्रकृति की खूबसूरत कारीगरी होते हैं। रंग-बिरंगे इंद्रधनुष से ये पंख वाकई इंद्रधनुष सी ही कबलियत रखते हैं। तुम्हें ये जानकर और भी आश्चर्य होगा कि

फेदर्स में इंद्रधनुष के सारे रंग होते हैं। इनमें से ज्यादातर रंग एक खास पिगमेंट के कारण बनते हैं। यह क्रिया ठीक ऐसे ही होती है जैसे खाना बनाने समय फूड

कलर्स को यून करने पर होती है। जैसे कि जब तुम किसी पकवान में लाल या पीला रंग मिलाते हो तो वो लाल या पीले रंग का हो जाता है। ठीक उसी तरह पंखों में भी जिस रंग का पिगमेंट मौजूद होता है वो उसी रंग के नजर आते हैं। यहां एक रोचक बात यह है कि इंद्रधनुष के बाकी प्रायमरी कलर्स के पिगमेंट तो फेदर्स में होते हैं लेकिन नीले रंग का कोई पिगमेंट नहीं होता। तो फिर ‘नीलकंठ’ जैसे पंखी

के पंखों का रंग कहां से आता है? इसके पीछे भी विज्ञान काम करता है। नीले रंग के मामले में प्रकृति द्वारा बनाई पंख की संरचना मुख्य काम करती है। नीले रंग के पंखों का आकार और संरचना इस तरह की होती है कि जब प्रकाश इस पर पड़ता है तब यह पंख केवल नीले रंग को ही हमारी आंखों पर रिफ्लेक्ट या परावर्तित करता है। यहां यह भी याद

रखना कि साधारण प्रकाश में इंद्रधनुष के सारे रंग छुपे होते हैं लेकिन नीले पंखों की डिजाइन ऐसी होती है कि वो हमारी आंखों तक केवल नीला रंग ही पहुंचाता है।



बचाओ पंख और पक्षी भी

ये जाहिर सी बात है कि पंख किसी पक्षी के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। लेकिन कुछ लोग इस बात को नहीं समझते और खूबसूरत पंखों के लिए पंखियों को मार देते हैं। दुनियाभर में इसके लिए कई सारे कानून भी बनाए गए हैं ताकि निदोष पंखियों को नुकसान पहुंचने से बचाया जा सके। हां, अगर जमीन पर गिरे पंख इकट्ठे करके कोई अपने पास रखे तो कोई बात नहीं।



दुनियाभर में ऐसी कई जगहें हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है। कुछ ऐसी ही एक जगह है उत्तर कोरिया का किजोंग-डोंग गांव। खूबसूरती के मामले में इस गांव का कोई तोड़ नहीं है, लेकिन यहां पर कोई रहने वाला ही नहीं है। हालांकि, इस गांव में आलीशान इमारतें, साफ-सुथरी सड़कें, पानी की टंकी, बिजली, स्ट्रीट लाइट समते तमाम तरह की सुविधाएं हैं।

दावा है कि यहां पर 200 निवासी हैं। बच्चों के लिए किडरगार्टन, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल के अलावा यहां रह रहे लोगों के लिए अस्पताल भी है। लेकिन पर्यवेक्षकों के मुताबिक यह गांव एकदम सुनसान है और यहां कोई नहीं रहता है। लोगों में भ्रम पैदा करने के लिए रोजाना घरों में लाइट जलाई जाती हैं और सड़कों पर सफाईकर्मों झाड़ू लगाते नजर आते हैं। लेकिन इस गांव में रहने वाले लोग नहीं दिखाई देते हैं।



पंख केवल उड़ान भरने में ही पंखियों की मदद नहीं करते। प्रकृति ने इन्हें इस तरह से बनाया है कि ये पंखियों के लिए रेनकोट भी बनते हैं, दुश्मन से बचाव का साधन भी और हर पंखी की अपनी पहचान का माध्यम भी। साथ ही ये तापमान को नियंत्रित रखने में भी मदद करते हैं। पंखों की रचना और रंगों को देखकर मेल-फीमेल पक्षी का पता भी लगाया जा सकता है। पंखियों के परों को अलग-अलग आकार-प्रकार के आधार पर कई श्रेणियों में बांटा जाता है।

एक्सपेरिमेंट

एक नीले रंग का पंख लेकर उस पर ऊपर की तरफ से फ्लेशलाइट डालो। इससे तुम्हें चमकता हुआ नीला रंग दिखाई देगा। अब इसी लाइट को फेदर के अंदर की तरफ से डालो। नीला रंग गायब हो जाएगा। मगार यही

एक्सपेरिमेंट जब तुम लाल या पीले या अन्य किसी रंग के पंख के साथ करोगे तो तुम्हें किसी भी डायरेक्शन से सेम कलर ही दिखाई देगा। है ना ये नेचर का मैजिक।

हरे रंग का जादू

अब इसी तरह पंखों के हरे जादू को भी समझो। यहां भी रोचक बात यह है कि नेचर ने केवल एक ही पक्षी ‘टरकोइज’ के पंखों में हरे रंग का पिगमेंट दिया है। तो फिर बाकी के हरे रंगों वाले पंख पंखियों के पास कैसे होते हैं? तो बाकी सारे हरे रंग के पक्षी असल में हरे रंग को दिखाने के लिए अपने पास मौजूद पीले रंग के पिगमेंट और ब्लू वेवलेन्स का कॉम्बीनेशन यून में लाते हैं। अब नीले और पीले रंग को मिलाने पर हरा रंग बनता है ये सब जानते ही हैं।

रोचक बातें पंखों की

पंख पंखियों के नाजुक शरीर की रक्षा का काम करते हैं। कुछ पंखी तो ऐसे भी हैं जिनके नन्हे पंख उनके लिए आइलेशेज का भी काम करते हैं। उल्टू जैसे कुछ पंखियों के पंख उनके लिए प्रोटेक्टिव शील का भी काम करते हैं और दुश्मनों की नजर से उन्हें पूरी तरह छुपा देते हैं। बर्फ में रहने वाले पंखियों के पैरों में भी पंख होते हैं और वे उनके लिए स्नो शुज का काम करते हैं। ये टंड के साथ-साथ उन्हें बर्फ में ग्रिप बनाए रखने में भी मदद करते हैं। कुछ पक्षी अपने पंखों से आवाज भी करते हैं। ये आवाज पंखों से गुजरने वाली हवा के कारण पैदा होती है।



टंड का समय था दिल्ली में बहुत ही ज्यादा टंड पड़ी थी। उस समय बादशाह अकबर और बीरबल दोनों ही सुबह-सुबह बगीचे में घूम कर रहे थे। बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा, बीरबल देख रहे हो कितनी ज्यादा टंड है। ऐसा लग रहा है कि अगर कोई बिना गर्म कपड़ों के बाहर आ जाए तो वह तुरंत ही बर्फ की तरह जम जाएगा। जी हां जहांपना बिल्कुल सही कह रहे हैं आप। बीरबल ने अकबर से कहा।

अच्छा बीरबल यह बताओ इतनी टंड में भी तुम यहां आ गए। लेकिन ऐसे बहुत से लोग होंगे जो इतनी सर्दी में घर से बाहर नहीं निकल रहे होंगे और अपने कामकाज को भी नहीं कर रहे होंगे। जी हां, जहाँपनाह आपकी बात तो सही है। लेकिन ऐसे बहुत से लोग भी है जो मजबूरी के चलते इस सर्दी में भी निकला करते हैं। मजबूरी में ऐसे काम किया करते हैं जो इस सर्द में नहीं करनी चाहिए। बीरबल ने कहा। अकबर ने बीरबल से कहा, अच्छा लेकिन मैं यह नहीं मानता। मैं नहीं मानता कि कोई इतनी सर्दी में अपने घर से निकलेगा और काम पर जाएगा। वह तो घर के अंदर रहकर गर्म बिस्तर पर लेटा रहेगा। लेकिन उठकर काम पर नहीं जाएगा। नहीं नहीं जहाँपनाह बात ऐसी नहीं है। लोगों की मजबूरी है कि वह इस सर्द में भी निकल करकाम करें बीरबल ने अकबर को बताया। अच्छा! ऐसी बात है तो मुझे साबित करके दिखाओ कि कोई इतनी सर्दी में भी चंद पैसों के लिए भी काम करने को कैसे निकल सकता है। बादशाह अकबर ने बीरबल चुनौती देते हुए कहा। वही पास एक तालाब भी था जिसका पानी बहुत ही ज्यादा ठंडा था। बादशाह अकबर ने उस तालाब की ओर इशारा किया और बीरबल से कहा, बीरबल उस तालाब को देखो उस तालाब को देखकर ही ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उसका पानी कितना ठंडा होगा। तुम एक ऐसे व्यक्ति को लेकर आओ जो रातभर इस तालाब में रहकर गुजार दें। मैं उसे ढेरों इनाम दूंगा। बीरबल ने कहा, आपका हुकुम सर आंखों पर। आप जैसा कह रहे हैं मैं वैसा तुरंत करता हूँ और आज ही एक ऐसे व्यक्ति का इंतजाम करता हूँ जो यह कार्य कर देगा।

बीरबल तुरंत ही दरबार से निकला और इस बात का ऐलान कर दिया कि राजा उस व्यक्ति को ढेरों इनाम देगे जो रात भर बगीचे की तालाब में रहकर गुजार देगा। जनता में से एक आदमी गंगाराम बादशाह के दरबार में पहुंचा और उसने राजा से कहा, बादशाह सलामत रहे। मेरे बादशाह आपने जो करने को कहा था वह करने के लिए मैं तैयार हूँ। बादशाह अकबर ने कहा, मैं तुम्हारे हिम्मत की दाद देता हूँ। आज के लिए तुम हमारे मेहमान हो। जाओ और रात को हम तुम्हें उस तालाब में लेकर जाएंगे। उस तालाब पर तुम्हें पूरी रात गुजारनी है। रात का समय हुआ। गंगाराम को तालाब के पास ले जाया गया। गंगाराम ने तालाब का पानी छूकर देखा। तालाब का पानी बहुत ही ज्यादा ठंडा था फिर भी गंगाराम हिम्मत करके तालाब के अंदर चला गया। शुरुआत में गंगाराम बहुत ही कांप रहा था लेकिन कुछ देर बाद वह सीधा खड़ा होकर पूरा रात गुजार दिया। दिन होते ही उसे बादशाह के दरबार पर बुलाया गया। बादशाह अकबर उसे देखकर दंग रह गए। उन्होंने तुरंत ही गंगाराम से पूछा, आखिरकार तुम पूरी रात इतनी ठंडी में कैसे रह गए? अगर मैं होता तो मैं मर ही जाता। गंगाराम ने बादशाह अकबर के सवालों को जवाब दिया, जहांपना, पास ही मैं एक जलता हुआ दीपक था जिसकी ओर ध्यान कर उसे देखकर मैं पूरी रात गुजार गया। मैंने अपना पूरा ध्यान उसपर रखा। ओह! तो यह बात है। तुमने उस दीपक से गर्मी ली और उस गर्मी से पूरी रात भर तालाब में रह गए। तो तुमने



बीरबल की खिचड़ी

तो हम सब के साथ धोखा किया है। वैसे मैं तुम्हें जाने देता हूँ, क्योंकि यह काम करना आसान नहीं था। लेकिन तुमने जिस तरीके का काम किया है उसके लिए मैं तुम्हें कोई भी इनाम नहीं दूंगा। यह कहकर बादशाह ने गंगाराम को वापस भेज दिया। वही पास में बीरबल खड़ा यह सब चीजों देख रहा था। तभी राजा ने बीरबल से कहा, देखा बीरबल इस तरह का काम कोई भी नहीं कर सकता। बीरबल ने कहा, जी हाँ जहांपनाह आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। यह कहकर बीरबल अपने घर लौट गया। अगले दिन बीरबल ने बादशाह अकबर को खाने में आमंत्रित किया। बीरबल ने कहा, बादशाह मैं बहुत ही अच्छी खिचड़ी बनाता हूँ। मैं चाहता हूँ कि कल आप मेरे घर आए और मेरी हाथ की बनी हुई खिचड़ी खाए। राजा ने बीरबल का निमंत्रण स्वीकार किया और अगले दिन बीरबल के घर जा पहुंचे। बीरबल के घर पहुंचते ही बादशाह ने बीरबल से कहा, बीरबल, लेकर आओ तुम्हारी खिचड़ी जरा हम भी तो उसका स्वाद ले कर देखें कि आखिर तुम कैसी खिचड़ी बनाते हो? जी हां जहांपना बस खिचड़ी तैयार होने वाली है। बीरबल ने कहा।

ठीक है राजा ने कहा। समय बीतता जा रहा था और राजा का भूख बढ़ता ही जा रहा था। ऐसे में बादशाह ने बीरबल से फिर पूछा, बीरबल तुम्हारी खिचड़ी बनने में और कितना समय लगा। मेरी भूख बढ़ती ही जा रही है। बीरबल ने जवाब दिया, बस जहांपना कुछ देर और आप की खिचड़ी तुरंत तैयार हो जाएगी। अच्छा ठीक है। जल्दी लेकर आओ। ऐसे करते करते और समय बीत गया और राजा का भूख बढ़ने लगा था उन्होंने गुस्से में आकर बीरबल से पूछा, तुम क्या कर रहे हो? अभी तक तुम्हारा खिचड़ी तैयार नहीं हुआ। जल्दी लेकर आओ मुझे बहुत भूख लगी है।

जी हां जहाँपनाह मैं अभी लेकर आता हूँ बस यह तैयार होने वाला है। यह कहकर बिरबल फिर अपनी रसोई की ओर चला गया। कुछ समय और बीतने के बाद राजा उठकर बीरबल की रसोई की ओर जा पहुंचे। बादशाह अकबर ने देखा कि बीरबल हांडी(पकाने का बरतन) को आग से बहुत ही ऊपर लगाकर रखा था। जिससे कि आग की ताप उस हांडी तक नहीं पहुंच सकती थी। ऐसे में राजा ने बीरबल ने कहा, अरे बेवकूफ! तुम आखिर कर क्या रहे हो? ऐसे में तो तुम्हारी खिचड़ी कभी भी नहीं पकेगी। पकेगी जहाँपनाह यह जरूर पकेगी। बीरबल ने कहा। अरे आग का ताप तो हांडी में पहुंच ही नहीं रहा है तो फिर तुम्हारी खिचड़ी कैसे पक सकती है। इसके लिए आग का ताप खिचड़ी की हांडी तक पहुंचाना चाहिए। राजा ने समझाते हुए कहा।

बीरबल ने कहा, जिस तरह से एक छोटा सा दीपक गंगाराम को ताप दे सकता है। तो इस तरह से हांडी को आग से ताप अवश्य ही मिल जाएगा।

यह बात सुनकर बादशाह समझ चुके थे कि उन्होंने क्या गलती की थी। तुरंत ही राजा ने बीरबल को कहा, बीरबल मैं समझ चुका हूँ कि तुम आखिर कहना क्या चाहते हो। मैं तुरंत ही गंगाराम को बुलाकर उसका इनाम उसे दूंगा और मैं तुम्हारा शुक्रिया करता हूँ कि तुमने मेरी गलती को मुझे बताया।

यहूदियों को गोली मारना चाहता हूं, हमास के पूर्व चीफ के 10 साल के बेटे की चिट्ठी आई सामने



तेल अवीव, एजेंसी। इजरायल डिफेंस फोर्ब्स ने हमास के दिवंगत प्रमुख याह्या सिनवार के 10 साल के बेटे इब्राहिम का एक कथित लेटर साझा किया है, जिसने सनसनी फैला दी है। यह पत्र गाजा पट्टी में 2024 के दौरान इजरायली सैनिकों की तरफ से बरामद किया गया था। याह्या सिनवार के खान्ते के दो साल पूरे होने पर इसे सबूत के तौर पर जारी किया गया है। बता दें कि यह पत्र बच्चे ने अपने पिता याह्या सिनवार को युद्ध की शुरुआत में लिखा था। इसमें एक तरफ जहां पिता के लिए प्यार और जुदाई का दर्द झलकता है, वहीं दूसरी तरफ हिंसा और नफरत की बातें भी साफ नजर आती हैं। गौर करने वाली बात यह है कि लेटर में 10 साल के बच्चे ने लिखा है कि वह लगातार कागज और गते से पिस्तौल, टैंक और राइफल बना रहा है। उसने लिखा है कि वह एक एके-47 क्लाशिनकोव राइफल उठाकर यहूदियों पर गोली चलाना चाहता है। पत्र के अंत में बच्चे ने लिखा है, हे मेरे भगवान, मैं कामना करता हूँ कि युद्ध समाप्त हो जाए और मैं आपको सुरक्षित देख सकूँ। अल्लाह आपकी रक्षा करे, पिता जी। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए दुआ करें। इसके साथ ही उसने पिता के गले मिलने और साथ सोने की इच्छा भी जताई है।

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव पर भारत की दो टूक, यूएन में कहा-तुरंत रुकें जहाजों पर हमले

संयुक्त राष्ट्र , एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पश्चिम एशिया के हालात पर चर्चा के दौरान भारत



ने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। भारत ने इस क्षेत्र में बढ़ते सैन्य तनाव को बेहद चिंताजनक करार देते हुए नागरिक बुनियादी ढांचों, कमर्शियल शिपिंग और खासकर भारतीय नाविकों पर हो रहे लगातार हमलों की कड़ी निंदा की है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत पावथानेनी हरीश ने गुरुवार को सुरक्षा परिषद की बहस में साफ कहे कि पश्चिम एशिया की सुरक्षा और स्थिरता भारत के लिए बेहद मायने रखती है। बहस के दौरान भारत का पक्ष रख रहे पावथानेनी ने रियाद और अन्य जगहों पर सऊदी अरब के नागरिक बुनियादी ढांचे और परराष्ट्रोपेक्ष पर हुए हमलों की निंदा की। उन्होंने कहा कि ये हालात बहुत चिंताजनक हैं, नागरिक बुनियादी ढांचे और जहाजों पर हमले तुरंत रुकने चाहिए। इन हमलों में एक भारतीय नागरिक मोहम्मद युसुफ अली की जान चली गई थी। भारत ने सऊदी अरब की संप्रभुता और उसकी सुरक्षा के प्रति पूर्ण एकजुटता व्यक्त की है।

रुस के कामचटका में लगे भूकंप के तेज झटके, जमीन र्स 152 किमी नीचे रहा केंद्र

मॉस्को, एजेंसी। रुस के सुदूर पूर्व में स्थित कामचाटका प्रायद्वीप इलाके में शुक्रवार को भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। युरोपीय-भूमध्यसागरीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 7 मापी गई। इस भूकंप का केंद्र जमीन से काफी नीचे यानी 152 किलोमीटर लगभग 94 मील की गहराई पर स्थित था। बता दें कि इतनी अधिक गहराई पर भूकंप आने के कारण अक्सर धरती की सतह पर होने वाले नुकसान का खतरा थोड़ा कम हो जाता है, फिर भी इतने बड़े झटकों से इलाके में हड़कंप मच गया। राहत की बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि इस भूकंप के बाद सुनामी की कोई संभावना, सलाह या खतरा नहीं है। यह भूकंप भारतीय समयानुसार सुबह 9:05 बजे आया। इसका केंद्र धरती से लगभग 152 किलोमीटर की गहराई में उत्तरी अक्षांश 52.068ए और पूर्वी देशांतर 157.164ए पर स्थित था। अलग-अलग एजेंसियों के अलग-अलग आंकड़े बता दें कि अलग-अलग वैश्विक निगरानी एजेंसियों के आंकड़ों में गहराई और तीव्रता में हल्का अंतर देखा गया।

नशे की हालत में लंदन की सड़क पर बेहोश मिलीं यूएई के शाही परिवार की महिला, पास में नंगे पैर खेल रहा था 3 साल का बच्चा

लंदन, एजेंसी। संयुक्त अरब अमीरात के शाही परिवार से जुड़ी एक महिला का बेहद चौकाने वाला मामला सामने आया है। शाही परिवार की 32 वर्षीय महारा अल नाहयान लंदन की एक व्यस्त सड़क पर कोकीन के अत्यधिक सेवन के बाद बेहोश पाई गई। उनके पास ही उनका तीन साल का मासूम बच्चा नंगे पैर तेज ट्रैफिक के बिल्कुल पास खेलता हुआ देखा गया।

बता दें कि यह घटना 13 जून को है। पश्चिम लंदन की सड़क पर महारा अल नाहयान को अचेत अवस्था में देखकर राहगीरों ने तुरंत मदद के लिए कदम बढ़ाया। बच्चा सड़क पर बिना जूतों के एक स्कूटर के साथ खेल रहा था

और ट्रैफिक बहुत पास से गुजर रहा था, जिसे देखकर वहां मौजूद लोगों ने बच्चे को सुरक्षित संभाला और पुलिस को सूचना दी। आधे घंटे तक पूरी तरह अचेत रहीं नाहयान

रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस लेने के बाद वह करीब आधे घंटे तक पूरी तरह अचेत रही। जब उन्हें होश में लाया गया, तो उन्होंने मौके पर मौजूद लोगों से कथित तौर पर कहा कि यह कोई कलहखाना नहीं है.... तुम लोग इतनी परवाह क्यों कर रहे हो? तुम इतने चंचित क्यों हो?

तलाशी और अस्पताल में भर्ती : मिली जानकारी के अनुसार, मौके पर पहुंची पुलिस और अधिकारियों ने जब उनकी

सऊदी अरब में उड़ानों पर संकट; भारत ने उमरा यात्रियों की मदद के लिए

मक्का में भी खोला कंट्रोल रूम, कहा-स्थिति जांचे बिना एयरपोर्ट न जाएं

दुबई, एजेंसी। भारत और सऊदी अरब के बीच उड़ानें प्रभावित होने के कारण वहां फंसे भारतीय नागरिकों, विशेष रूप से उमरा यात्रियों की मदद के लिए भारत ने मक्का में एक अतिरिक्त नियंत्रण कक्ष स्थापित किया है। जेद्दा स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास ने यह जानकारी दी। यमन के हूती विद्रोहियों की ओर से सऊदी अरब में असैन्य बुनियादी ढांचे को निशाना बनाकर किए गए कई घातक झोन और मिसाइल हमलों के बाद खाड़ी क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है, जिससे देशभर में उड़ानें प्रभावित हुई हैं। वाणिज्य दूतावास ने बुधवार को बताया कि नया नियंत्रण कक्ष मक्का स्थित भारतीय हज यात्री कार्यालय में स्थापित किया गया है और जेद्दा में पहले से मौजूद चौबीसों घंटे काम करने वाला नियंत्रण कक्ष भी अपनी सेवाएं जारी रखेगा।

इससे पहले मंगलवार को वाणिज्य दूतावास ने भारतीय नागरिकों, विशेष रूप से जेद्दा और मदीना आने-जाने वाले उमरा यात्रियों को सलाह दी थी कि वे अपनी विमानन कंपनियों के नियमित संपर्क में रहें और हवाई अड्डे के लिए रवाना होने से पहले अपनी उड़ान की स्थिति जरूर पता कर लें। उमरा इस्लाम की एक धार्मिक परंपरा है, जिसे साल में किसी भी समय किया जा सकता है, जबकि हज यात्रा साल में एक निश्चित समय पर होती है। उमरा के लिए श्रद्धालु सऊदी अरब के मक्का जाते हैं, जो इस्लाम का सबसे पवित्र शहर है। वाणिज्य दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि मदद की जरूरत



होने पर भारतीय नागरिक मक्का स्थित नियंत्रण कक्ष से फोन के जरिए संपर्क कर सकते हैं। यात्रियों को उड़ानें रद्द होने, उनके समय में बदलाव, यात्रा के वैकल्पिक इंतजाम और जरूरत पड़ने पर ठहरने की व्यवस्था के लिए ट्रेवल एजेंट, टूर ऑपरेटर और उमरा सेवाएं देने वाली एजेंसियों के संपर्क में रहने की भी सलाह दी गई है।

वाणिज्य दूतावास ने बताया कि वह प्रभावित भारतीय नागरिकों की मदद के लिए विमानन कंपनियों और स्थानीय अधिकारियों के नियमित संपर्क में है। उड़ानों के संचालन से जुड़ी नयी जानकारी दूतावास के आधिकारिक सोशल मीडिया माध्यमों पर साझा की जाएगी। वाणिज्य दूतावास ने प्रभावित यात्रियों की मदद के लिए जेद्दा में भी चौबीसों घंटे काम करने वाला नियंत्रण कक्ष स्थापित किया है। रियाद स्थित भारतीय दूतावास ने सऊदी अरब में रह रहे भारतीय नागरिकों को स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों का पालन करने, हवाई हमला होने की स्थिति में घरों के अंदर रहने और मौजूदा घटनाक्रम से जुड़े वीडियो या खबरें

राफेल के सामने फिसड़ी हैं चीन के जे-16 लड़ाकू विमान, मिस में हवाई युद्धाभ्यास ने खोली पावर पोल

बीजिंग एजेंसी। चीन के जे-16 और फ्रांस निर्मित राफेल लड़ाकू विमानों के बीच मिस में हुए हवाई युद्धाभ्यास ने दोनों विमानों की क्षमताओं को लेकर नई चर्चा छेड़ दी है।

अगस्त के दूसरे पखवाड़े से सितंबर 2026 की शुरुआत तक चले ‘इंगल्स ऑफ सिविलाइजेशन 2026’ अभ्यास में पहली बार चीनी जे-16 विमानों ने मिस के राफेल और मिग-29एम2 विमानों के साथ हवाई युद्ध की परिस्थितियों में प्रशिक्षण लिया। चीनी रक्षा मंत्रालय ने 23 अगस्त के अभ्यास का वीडियो भी जारी किया था, जिसमें जे-16 और राफेल के बीच मध्यम तथा नजदीकी दूरी के हवाई युद्धाभ्यास का उल्लेख किया गया। बाद में कुछ रक्षा समाचार माध्यमों ने दावा किया कि करीबी मुकाबले में राफेल की घुर्ती चीनी पायलटों के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली रही। फ्रांस की कंपनी दसां द्वारा निर्मित राफेल दो इंजन वाला बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान है। इसकी खासियत केवल गति या हथियारों की क्षमता नहीं, बल्कि उड़ान के दौरान

नियंत्रण, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली और अलग-अलग प्रकार के अभियानों को बीच मिस में हुए हवाई युद्धाभ्यास ने दोनों विमानों की क्षमताओं को लेकर नई चर्चा छेड़ दी है।

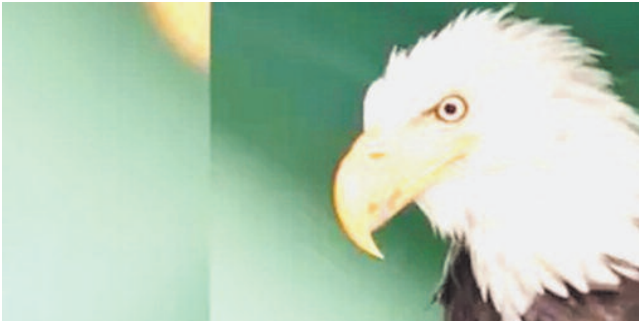
मेटेओर मिसाइल: यह दृश्य सीमा से बाहर हवा से हवा में हमला करने के लिए विकसित मिसाइल है, जो दूर हवाई लक्ष्यों के विरुद्ध राफेल की क्षमता बढ़ाती है।

स्पेक्ट्र प्रणाली: यह रडार और अन्य खतरों की पहचान, इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा तथा जवाबी कार्रवाई में सहायता करती है। चीन का शेंयांग जे-16 दो इंजन वाला भारी बहुउद्देशीय लड़ाकू से विमान है। यह लंबी दूरी के अभियानों, विभिन्न प्रकार के हथियार ले जाने और आधुनिक संसरां के इस्तेमाल के लिए तैयार किया गया है। इसकी प्रमुख क्षमताओं में शामिल हैं।

इंटरनेट सनसनी जैकी की मौत के कारण का खुला राज, पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हुई बर्द फलू की पुष्टि

वाशिंगटन , एजेंसी। कैलिफोर्निया में वन्यजीव प्रेमियों और इंटरनेट की दुनिया की मशहूर गिद्ध प्रजाति का बाज जैकी की मौत बर्द फलू के कारण हुई थी। कैलिफोर्निया डिपार्टमेंट ऑफ फिश एंड वाइल्डलाइफ ने हाल ही में इसकी पुष्टि करते हुए एक प्रेस रिलीज जारी की है।

बता दें कि जैकी की मौत पिछले साल अगस्त में हुई थी। सैन डिइगो जू वाइल्डलाइफ अलायंस में हुए पोस्टमार्टम और अन्य मेडिकल जांच में पता चला कि उसकी मौत का मुख्य कारण अत्यधिक संक्रमक बर्द फलू (एचपीएआई) था। पूरी रिपोर्ट में क्या-क्या बातें सामने आई? ओजाई रैक्टर सेंटर के निदेशक क्रिस एक्स्टीन ने बताया कि इस रिपोर्ट से जैकी के इलाज के दौरान सामने आए लक्षणों को समझने में मदद मिली है। विशेषज्ञों के मुताबिक, यह इस



वायरस का एक दुर्लभ मामला था, जिसके कारण उसके पेट में गंभीर अल्सर हो गए थे। इससे लगातार अंदरूनी ब्लीडिंग, एनीमिया (खून की कमी) और अंत में बैक्टीरियल सेप्सिस (संक्रमण) फैल गया था। संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए जैकी के अवशेषों का अंतिम संस्कार (क्रैमेटेड) कर दिया गया है। कैमरे के जरिए दुनिया भर में थी लोकप्रिय

जैकी और उसका साथी पिछले एक दशक से अधिक समय से इंटरनेट सेंसेशन बने हुए थे। लॉस एंजेलिस के पूर्व में सैन बर्नार्डिनो पहाड़ों में बिग बीयर झील के पास पेड़ों पर बने उनके घोंसले को देखने के लिए लाखों लोग ऑनलाइन वीडियो फीड का इस्तेमाल करते थे। फेड्स ऑफ बिग बीयर वैली नामक गैर-लाभकारी संस्था ने 2015 में इस

हालांकि अभियोजन रियो पहलवानपोर ने अदालत को बताया कि राहगीरों ने देखा कि बच्चा अकेला और बिना जूतों के सड़क पर था और तेज ट्रैफिक के बेहद करीब होने के कारण लोगों को बीच-बचराव करना पड़ा।

बचाव पक्ष का क्या कहना है : दूसरी ओर बचाव पक्ष के वकील स्टीवन वुल्ले केसी ने अदालत में दलील दी कि उनकी मुवकिल ने मान लिया है कि उस दिन उनसे बहुत बड़ी भूल हुई थी। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जिस दिन वह बेहोश पाई गई, उस दिन उन्होंने कोई ड्रग नहीं लिया था, बल्कि पिछले कुछ दिनों में किए गए नशा सेवन के कारण वह अत्यधिक थकान की

अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उड़ानों का संचालन बंद है, जबकि दम्माम, जेद्दा और मदीना से उड़ानें कुछ बाधाओं के साथ जारी हैं। दूतावास के अनुसार, भारतीय विमानन कंपनियों एअर इंडिया, एअर इंडिया एक्सप्रेस, अकासा एअर और इंडिगो ने 17 अक्टूबर तक सऊदी अरब से आने-जाने वाली अपनी उड़ानें स्थगित कर दी हैं। वहीं, सऊदी अरब की विमानन कंपनियां सऊदिया और फ्लाइनास अपनी कुछ निष्भारित उड़ानों का संचालन कर रही हैं।

कैप्टन मच्छार पर हमले के बाद इजराइल सख्त; पाकिस्तानी पायलटों पर लगाया प्रतिबंध, हवाई क्षेत्र से गुजरने वाले विमानों में भी नहीं कर सकेंगे इ्यूटी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तानी पायलटों और घातक दल के सदस्यों को नये प्रतिबंधों के तहत इजराइल के हवाई क्षेत्र से गुजरने वाले विमानों में सेवाएं देने से रोक दिया गया है। पिछले महीने संयुक्त अरब अमीरात से इजराइल जा रहे एक विमान का अपहरण करने की कोशिश की गई थी। इस कथित साजिश को नाकाम करने के दौरान भारतीय पायलट कैप्टन रश्मि मच्छार घायल हो गये थे। इजराइल के सरकारी प्रसारक कान की खबर के अनुसार विमान अपहरण की कोशिश के बाद परिवहन मंत्रालय के विमानन सुरक्षा संचालन केंद्र ने नये और संशोधित दिशानिर्देश जारी किए हैं। इजराइल के प्रसारक एना12 की खबर के अनुसार मंत्रालय ने एक अक्टूबर को विदेशी विमानन कंपनियों को इन प्रतिबंधों के बारे में सूचित किया था। गत 30 सितंबर को दुबई से तेल अवीव जा रही पलाईदुबई की उड़ान एफजेड 1073 के कॉकपिट में सह-पायलट ने कैप्टन रश्मि मच्छार पर चाकू से हमला कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया था। विमान का सह-पायलट विमान को कथित तौर पर गिराने की कोशिश कर रहा था, लेकिन विमान के भारतीय कैप्टन मच्छार ने बहादुरी से मुकाबला करते हुए उसके प्रयास को विफल कर दिया था। चाकू से किए गए हमले में मच्छार घायल हो गये थे, लेकिन वह 174 यात्रियों को ले जा रहे विमान को बचाने में सफल रहे थे। नये दिशा-निर्देश के अनुसार, इजराइल के हवाई क्षेत्र में प्रवेश करने वाले विमानों के पायलटों और घातक दल के सदस्यों के पास ऐसे देशों की नागरिकता या दोहरी नागरिकता नहीं होनी चाहिए, जिनके इजराइल के साथ आधिकारिक राजनयिक संबंध नहीं हैं।

भारतीय मूल के पति की हैवानियत, सहकर्मी को डेट करने पर पत्नी का गला रेता; भारत भागने की फिराक में था आरोपी



वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के शिकागो से एक बेहद खौफनाक मामला सामने आया है। यहां भारतीय मूल के एक 31 वर्षीय एक व्यक्ति ने अपनी 32 वर्षीय अलग रह रही पत्नी की बेरहमी से हत्या कर दी। हत्या की वजह यह थी कि महिला ने अपने एक पूर्व सहकर्मी के साथ रिश्ते में होने की बात कही और उसके साथ दोबारा साथ रहने से साफ इनकार कर दिया था।

आरोपी की पहचान भारतीय मूल के अंकुर पटेल के रूप में हुई है। उसकी पत्नी की एक बेटी है। दोनों आपसी अनबन के बाद इसी साल माई में अलग हो गए थे और महिला घर छोड़कर चली गई थी।

परिवार के दबाव के बाद वापस लौटी महिला : मिली जानकारी के अनुसार, परिवार के दबाव में वह कुछ समय के लिए वापस लौटी, लेकिन फिर से अलग होकर लुइसियाना चली गई और एक अन्य व्यक्ति को डेट करने

युआन , एजेंसी। कैसर की खबर मिलने के बाद 67 वर्षीय वांग यिंग इलाज कराने की बजाय एक महीने के लिए घूमने निकल गई और जब घर लौटी तो उसका दयूमर सिकुड़ा हुआ मिला। यह हैरान कर देने वाला मामला चीन का है जहां, कैसर जैसी गंभीर बीमारी का पता चलने के बाद लोग हताश हो जाते हैं, वहीं वांग ने अपने जीवन के सबसे बड़े सपने को पूरा करने की राह चुनी। इलाज और सर्जरी से ठीक पहले उन्होंने अंटार्कटिका जाकर पेंगुइन की तस्वीरें खींचने का फैसला किया, और इस एक यात्रा ने उनकी जिंदगी में एक नया मोड़ ला दिया।

बचपन के सपने को पूरा किया और कैसर को दी मात : चीन के युआन प्रांत की रहने वाली वांग यिंग एक स्कूल में प्रशासनिक पद पर कार्यरत थीं। साल 2013 में जब वह अपने रिटायरमेंट की योजना बना रही थीं, तभी एक स्कूटीन जांच के दौरान उन्हें थायरॉइड कैसर का पता चला। डॉक्टरों ने उन्हें तुरंत सर्जरी कराने का सुझाव दिया। वांग को बचपन से ही पक्षियों और वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी का बेहद शौक था। वह अपने जीवन में 1,200 से अधिक दुर्लभ पक्षी प्रजातियों की तस्वीरें ले चुकी थीं। बीमारी की खबर सुनने के बाद उन्होंने तय किया कि अगर जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है, तो क्यों न अंटार्कटिका जाकर पेंगुइन को देखने और कैमरे में कैद करने का अपना पुराना सपना पहले पूरा किया जाए।

शिकागो बुलाकर दिया खौफनाक घटना को अंजाम : मीडिया रिपोर्ट्स की माने तो अंकुर ने अपनी पत्नी को बेटी से मिलाने के बहाने शिकागो बुलाया। अपनी बेटी के भारत बंजे जाने से अनजान महिला अपने नए पार्टनर के साथ शिकागो पहुंची। उसका पार्टनर बाहर गाड़ी में ही इंतजार कर रहा था, जबकि महिला अंकुर के अपार्टमेंट में चली गई।

जब घर पहुंचने पर महिला को पता चला कि उसकी बेटी वहां नहीं है, तो उसने अंकुर के साथ रहने से साफ इनकार कर दिया और कहा कि वह अपने नए पार्टनर के साथ ही रहेगी। इसी बात से आग बबूला होकर अंकुर ने रसोई के चाकू से उसकी गर्दन पर ताबड़तोड़ कई बार किए। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में महिला के शरीर पर कई घाव पाए गए हैं। पुलिस पर लापरवाही के आरोप बता दें कि बाहर इंतजार कर रहे महिला के पार्टनर ने जब उसे बार-बार मैसेज किए और कोई जवाब नहीं मिला, तो उसने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची थी, लेकिन पार्टनर यह नहीं बता पाया कि महिला किस अपार्टमेंट में गई थी, इसलिए पुलिस वापस लौट गई। ऐसे में यह राज तब खुला जब अंकुर के दोस्त उससे मिलने उसके अपार्टमेंट पहुंचे, क्योंकि वह तय समय पर उनसे नहीं मिला था। दोस्तों ने देखा कि घर के अंदर परिवार मशीन के पास महिला का शव पड़ा था और अंकुर वहां से गायब था। भारत भागने की फिराक में था अंकुर गौरतलब है कि हत्या के तुरंत बाद अंकुर शिकागो के ओहेयर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहुंचा किता भारत भाग सके, लेकिन काउंटर्नल बंद होने के कारण वह टिकट नहीं खरीद पाया। इसके बाद उसने एक होटल में कक्का लिया, हत्या में इस्तेमाल हथियार को ठिकाने लगाया और एक टारगेट स्टोर से नए कपड़े खरीदे।

मक्का की मरिजद के अंदर कर रहे थे गलत काम, सऊदी ने 2 बांग्लादेशियों को दी फांसी



मक्का, एजेंसी। सऊदी अरब ने मक्का की एक मस्जिद के अंदर अनैतिक कृत्य करने के दोषी दो बांग्लादेशी नागरिकों को फांसी दे दी है। बांग्लादेश के द डेली स्टार अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, जेद्दा में बांग्लादेश के वाणिज्य दूतावास ने कहा है कि उन्हें इन फांसी के बारे में पहले से कोई सूचना नहीं दी गई थी।

बुधवार को सऊदी अरब के गृह मंत्रालय द्वारा जारी और सरकारी सऊदी प्रेस एजेंसी द्वारा प्रकाशित एक बयान के अनुसार, ये मौत की सजा मक्का क्षेत्र में दी गई। जेद्दा में बांग्लादेश के महावाणिज्य दूतावास ने इस मामले की औपचारिक स्वीकृति के लिए सऊदी अधिकारियों से संपर्क किया है।

बांग्लादेश के अधिकारियों ने क्या कहा : मिशन के एक अधिकारी ने गुरुवार को द डेली स्टार को व्हाट्सएप संदेश में बताया, +मंत्रालय ने वाणिज्य दूतावास को पहले से सूचित नहीं किया था।+ अधिकारी ने आगे कहा, +इस संबंध में हमने सऊदी विदेश मंत्रालय को एक औपचारिक पत्र सौंपा है, जिसमें इन मामले की औपचारिक स्वीकृति का अनुरोध किया गया है। सऊदी गृह मंत्रालय ने

माइनस 10 डिग्री तापमान में लुटा दी जीवनभर की सेविंग : अंटार्कटिका की लगभग एक महीने की इस यात्रा पर करीब 1.5 लाख चीनी युआन (लगभग 22,000 डॉलर) का खर्च आना था। यह रकम उनकी पूरी बचत से भी अधिक थी, ऐसे में उनकी मां ने उनका सहयोग किया और बाकी पैसे दिए। अंटार्कटिका की वाकई परिस्थितियां-माइनस 10 डिग्री सेल्सियस तापमान, हाइड कंपा देने वाली बर्फनीली हवाओं और बर्फनारी- के बावजूद वांग का इरादा नहीं डगमगाया। उनका मुख्य लक्ष्य एक मां पेंगुइन को अपने चूजे को खाना खिलाते हुए फोटो खींचना था। घंटों की कड़ी मेहनत और धैर्य के बाद आखिरकार उन्होंने वह यादगार पल अपने कैमरे में कैद कर ही लिया।

मेडिकल जांच में सामने आया हैरान करने वाला रिजल्ट अंटार्कटिका के इस अद्भुत सफर से लौटने के बाद वांग जब अस्पताल में अपने फॉलो-अप चेकअप के लिए गई, तो डॉक्टरों की रिपोर्ट देखकर इस हैरान रह गए। जांच में पाया गया कि एक महीने पहले के मुकाबले उनका दयूमर अब पहले से छेड़ा हो गया था। डॉक्टरों ने स्थिति को देखते हुए फिलहाल तुरंत सर्जरी करने से मना कर दिया और उन्हें रेगुलर मॉनिटरिंग में रहने की सलाह दी। वांग यिंग अब तक दुनिया के 30 से अधिक देशों की यात्रा कर चुकी हैं।

